वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १६ अंक ८ अगस्त २०१६

पारम्परिक कृषिज्ञान - विशेषांक

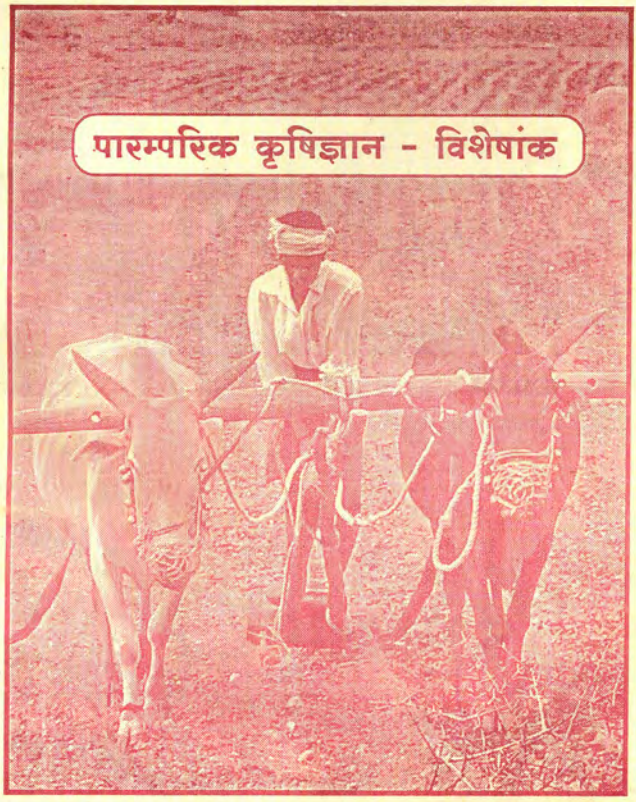

'कृषिश्च मे..., कृष्ट पच्याश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।' (यजु.)

मेरी कृषि और कृषि से उत्पन्न उपज यज्ञ अर्थात् सुव्यवस्थित कार्य विधि से सिद्ध हो।

प्रकाशन समारोह - लातूर

महाराष्ट्र सभा के मन्त्री श्री माधवराव देशपाण्डे द्वारा लिखित **'सत्यार्थप्रकाश का व कशासाठी?'** इस मराठी ग्रन्थ का प्रकाशन करते हुए डॉ.जे.एम.वाघमारे, डॉ.दीनदयालजी एवम् अन्य ।

साप्ताहिक लातूर समाचार द्वारा प्रकाशित **'ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव विशेषांक'** का विमोचन करते हुए डॉ.वाघमारेंजी, कव्हेकरजी, संपादक श्री जडे, दयारामजी बसैये, दिवे, मोरे, पाराशर आदि।

वैदिक विचारों के प्रसार हेतु समर्पित आर्य साप्ताहिक **'लातूर समाचार'** के सम्पादक श्री दयानंदजी जडे का सम्मान करते हुए सभा के उपप्रधान श्री बसैये तथा मन्त्री श्री देशपांडे ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ कलि संवत् ५११७ विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९३ श्रावण अगस्त २०१६

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५१९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर,
प्रा.सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

अ) श्रावणी वेदप्रचार-आवाहन ४
ब) वैद्य विज्ञानमुनिजी द्वारा लिखित 'पारम्परिक कृषिज्ञान' ग्रन्थ
(कृषिज्ञान विशेषांक)..... ६ से ३४ तक
१) दो शब्द ६
२) भूमिका ७
३) मन की बात ८
४) प्राक्कथन ९
५) कृषिमहत्त्व ११
६) कृषि और चन्दमा १६
७) बिऊड (जड़झूंडी)..... २१
८) जैविक खाद निर्माण २५
९) वैदिक कृषि की उपयुक्तता २७
क) मानवजीवन कल्याण वेदज्ञान (श्रावणी) प्रचार-राज्य कार्यक्रम..... ३५
ड) निबंध स्पर्धा परिणाम ४१

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार २०१६

(श्रावणी उपाकर्म पर्व)

* नम्र आवाहन *

सभी आर्यजनों को ज्ञात होगा कि महाराष्ट्र प्रान्तीय सभा द्वारा दि.३ से ३१ अगस्त २०१६ के दौरान राज्यभर की १३८ आर्य समाजों में पूर्व निधारित तिथियों के अनुसार श्रावणी उपलक्ष्य में मानव जीवन कल्याण वेदप्रचार कार्यक्रम मनाये जा रहे हैं। जैसा कि आप सभी को विदित ही है कि महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर अकाल पडने से इस के श्रावणी उत्सव सामान्य रुप से मनाये जा रहे है । इसीलिए सभा ने आर्थिक परिस्थिति का विचार करते हुए इस वर्ष उत्तर भारतीय विद्वानों को आमन्त्रित नहीं किया है । एक दो आये है, तो वे भी समर्पित भाव से वेदप्रचार करने की अभिलाषा से! अत: महाराष्ट्र के ही विद्वानों व भजनोपदेशकों से वेदप्रचार कराया जा रहा है । इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए कईं आर्य समाजों के कार्यक्रमों के दिनों में भी कटौती की गई है । ऋषि के मन्तव्यों के अनुसार हमें 'वेद के पढने-पढाने व सुनने-सुनाने के' उद्देश्य के प्रति हम सभी को संकल्पबद्ध रहना है । इसलिए हम सभी श्रावणी वेदप्रचार की अपनी परम्परा को बनाये रखने के लिए प्राप्त परिस्थितियों में भी इस वेदप्रचार पर्वों को उतने उत्साह के साथ मनाना है । अत: सभी आर्य समाजों से करबद्ध प्रार्थना है कि वे अपनी आये हुए विद्वानों से अपनी निश्चित की हुई तिथियों पर श्रावणी वेदप्रचार पर्व मनावें । सभा को यथाशक्ति वेदप्रचारनिधि देवें ! आर्य विद्वानों का समुचित सम्मान व आदरातिथ्य करते हुए आर्यसमाजों के साथ ही स्कूल, कालेजों व सार्वजनिक स्थलों पर कार्यक्रम लेवें । सभी आर्य समाजों व विद्वानों-भजनोपदेशकों श्रावणी परिपत्रक भेजें गये है । डाक विभाग की विलम्बिता के कारण वे न मिले हो तो इसी अंक के ३५ से ४० पृष्ठ पर देखें । पूरा श्रावणी विवरण छपा है। कोई असुविधायें हो,तो सभा मन्त्री या वेदप्रचार अधिष्ठाता से सम्पर्क करें। सभी आर्य समाजों व आर्यजनों को श्रावणी वेदप्रचार उत्सव के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई !

- ० विनीत ० -

डॉ.ब्रह्ममुनि	माधव देशपाण्डे	उग्रसेन राठौर	लक्ष्मण आर्य गुरुजी
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परळी-वैजनाथ

।।ओ३म्।।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मुखपत्र मासिक

वैदिक गर्जना (अगस्त २०१६)

कृषिविषयक मौलिक जानकारी प्राप्त कराने हेतु

कृषि विशेषांक (लघुग्रन्थ)

पारम्परिक कृषिज्ञान

(विशेषांक)

लेखक

वैद्य विज्ञानमुनि

(प्रमुख वैद्य, दीवानचंद मायर स्मृति संजीवनी चिकित्सा केन्द्र, श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम, परली-वै.)

संशोधक

डॉ.विश्वपाल वेदालंकार

(आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया-राजस्थान)

प्रकाशक

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज,परली-वैजनाथ

दो शब्द...

कृषि भारतवर्ष की आत्मा कहलाती है । भूमाता से वरदान के रुप में प्राप्त 'अन्न' हम सबका आधार है । कृषि के माध्यम से हम सब को अन्न मिलता है और सारी प्रजा सुखी व समृद्ध हो जाती है । देश भी आर्थिक दृष्टि से बलवान् होता है, तो वह कृषि के कारण ही ! अधिक उत्पादन लेने हेतु भूमि को अधिक उर्वरा बनाने की विधि हमारे पूर्वज कृषकों के पास थी । इसी कारण पुराने जमाने में अत्यधिक फसल निकलती थी और जमीन भी सुरक्षित रहती थी । दुर्भाग्य से आज अधिक धान्य निकालने की प्रवृत्ति ने जहां खाद्यान्न को विषैला बना दिया है, वहीं भूमि को बंजर बनाने का दुष्प्रयास जारी है। नये-नये संकरित अन्न-धान की भरमार और उसमें भी घातक औषधियों के प्रयोग से हमने एक ओर मूल बीजों को समाप्त किया ही और साथ में फलों, साग-सब्जियों, दालों व विभिन्न अन्नों के स्वाद को भी गंवा दिया । परिणामत: प्राकृतिक कृषि परम्परा खण्डित हो गयी । अब धीरे-धीरे लोग पुन:श्च अपनी मूलभूत कृषिप्रणाली की ओर बढते नजर आ रहे हैं । पुराने लोग भले ही अल्पशिक्षित रहे होंगें, लेकिन उन्होंने जहां स्वास्थ्यरक्षा हेतु प्राकृतिक व आयुर्वेद की पुरानी परम्परा को निरन्तर जारी रखा है,वहीं भारतीय पध्दति को भी जीवित रखा है।

हमारे अभिन्न बालसखा वैद्य विज्ञानमुनिजी (अण्णारावजी पाटिल) भी एक ऐसे ही विजिगुषी वृत्ति के धनी रहे हैं । बचपन से ही उनमें सत्यान्वेषन व जिज्ञासा की भावना विद्यमान है । हम दोनों एक ही ग्राम के निवासी होने के कारण मैं उनकी इन सप्रवृत्तियों को भलीभांति जानता हूँ । अल्पशिक्षित होते हुए भी उन्होंने पू.गुरुजी स्वामी श्रद्धानन्दजी का सुसान्निध्य पाकर तथा निरत्नर विद्वानों के सत्संग, वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय, साधना, चिन्तन व अनुशीलन से अपने व्यक्तिगत साधु जीवन के साथ ही परिवार को भी वैचारिक दृष्टि से सुसंस्कारित करने का प्रयास किया है ।

खेती, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा तथा पारम्परिक औषधियों के बारे में उनका मन सदैव खोजी रहा है । एक कुशल वैद्य बनकर उन्होंने सेवावृत्ति से आज तक अनेकों रोगियों की सेवा की है। कृषि के बारे में भी उनका पारम्परिक ज्ञान बहुत ही चिंतनपरक व मौलिक है, जिससे कृषकों अनेकों लाभ मिलता रहेगा। प्रस्तुत कृषिविषयक लघुग्रन्थ किसानों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध हो सकता है। सभा ने वैदिक गर्जना का यह कृषि विशेषांक प्रकाशित किया है । मैं लेखक को बधाई देते हुए उनके मंगलजीवन की कामना करता हूँ ।

– डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी
प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

भूमिका...

पूज्य विज्ञानमुनिजी की कृषिसम्बन्धी पुस्तक मैं आद्योपान्त पढी । इसमें जहाँ कृषि सम्बन्धी भूमिसुधार, खाद, बीज, बैल, वर्षासम्बन्धी बातों को पूर्ण खोजकर विस्तार से लिखा है, वहीं दूसरों के अनुभव और कृषि प्रशिक्षण केन्द्रों की बातों को भी उदाहरण के रुप में समझाया है। इन्हें पढकर पाठक के मन में नई स्फूर्ति, नया ज्ञान और नया करने का मन करता है । बाग-बगीचों से लेकर लता, औषधि और पर्यावरण से प्रभावित समस्त भूमण्डल और उसके चराचर जगत् का विस्तृत वर्णन किया है ।

इस अन्वेषण में जो मुख्य बात है, वह है चन्द्रमा के साथ हर वस्तु का बिगडना और सुधरना। इस विषय में भूमि, समुद्र, घास-पात, पेड-पौधे, उनका वपन कर्तन, पशुओं मनुष्यों में चन्द्रमा का प्रभाव, उसके कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष के मुहूर्त से खेती और वन विभाग का बिगडना, सुधरना यहां तक कि वृक्षों के काटने या बीजों के सुरक्षित रखने में भी चन्द्रमा का बिगाडने, सुधारने में पूरा सहयोग है ।

मुनिजी ने बहुत समय तक अपने अनुभव इकट्ठे किये हैं । साथ में दूसरों के कार्यों को भी शुभ अशुभ मुहूर्त में शुरु किये कार्यों का कैसा कैसा परिणाम रहा, ये सब बातें वर्षों तक कार्य रुप में अनुभव कर इस पुस्तक पर अपनी लेखनी उठाई है । अत: यह कृषि विषयक नवीन शोध का उनका अद्‌भुत ग्रंथ है । जो पढेगा वह अवश्य ही तदनुकूल चलकर लाभान्वित होगा। इस कार्य के लिये हम सभी मुनिजी के बहुत बहुत आभारी व कृतज्ञ हैं । धन्यवाद .. !

- डॉ.विश्वपाल वेदालंकार
'आर्ष कन्या गुरुकुल', दाधिया जि.अलवर
(राजस्थान) मो.०७६६५९३१६९८

सीरा युंजन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक् ।
धीरा देवेषु सुम्नया ।।(यजु.१२/६७)

(धीरा:) ज्ञानी तथा (कवय:) क्रान्तदर्शी जन (देवेषु) विद्वानों की सम्मति में स्थित होकर (सीरा: युंजन्ति) हलों को जोतते हैं तथा (युगा) जुआ आदि को (सुम्नया) सुखपूर्वक (पृथक् वितन्वते) पृथक् पृथक् विस्तारयुक्त करते हैं। वैसे ही आप भी कृषि कर्म का सेवन करो ।

* * *

मन की बात

पूज्य श्री विज्ञानमुनिजी, नाम अत्यंत सार्थक है । मानव जीवन से संबंधीत जो भी क्षेत्र है, उसमें वे विज्ञान का आधार खोजते हैं, समझते हैं और उसे अपनी वाणी तथा लेखनी के माध्यम से मनुष्य कल्याण हेतु घर-घर, द्वार-द्वार पहुँचाये की कोशीश करते है । सर्पदंश चिकित्सा, बिच्छु चिकित्सा, कृषिविज्ञान, भारतीय त्योहारों का वैज्ञानिक आधार, रोगचिकित्सा आदि विषयों पर उनका ज्ञान और अनुभव निश्चित ही विस्मयजनक तथा विश्वसनीय है।

'कृषि विज्ञान' इस विषय पर उन्होंने कृषकों के हित में छोटासा ग्रन्थ लिखा है, जिसमें उन्होंने वेद तथा आर्ष ग्रंथों का प्रमाण दिये हैं । आधुनिक विज्ञान में कृषि वैज्ञानिकों ने (खरीप मौसम) वर्षा ऋतु की बुआई १५ जून से ३० जून तक तथा रब्बी फसल की बुआई १५ सितम्बर से ३० सितम्बर (ऋतुमान नियमित है) तक करनेकी शिफारीश की है और इन दोनों पक्षों का काल शुक्ल पक्ष में आता है। इस दौरान बोई हुई फसल अधिक वर्धित, निरोगी एवं उत्पादक होती है । इससे निश्चित है की चंद्रमा तथा सूर्य की गति जिसपर कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष निर्भर है, इसका योगदान बुआई की तिथि निर्धारण में है । साथ ही साथ रब्बी में गेहूं तथा चना देर से बोया जाता हैं। उसकी तिथि वैज्ञानिकों ने १५ अक्तूबर से ३० अक्तूबर निर्धारित की है, यह भी शुक्लपक्ष में ही होता है । जिन फसलों का पक्वता काल ३ से ४ महिनों का होता है, उनकी फूल आने की तिथि शुक्लपक्ष के साथ शुरु होती है, जहाँ कि प्रकाश जादा और अंधेरा कम होता है । वैज्ञानिक उसे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कहतें हैं । इन प्रमाणों से वैज्ञानिक आधार पर इनमें चंद्रमा का प्रभाव सिद्ध होता है । जडझूंडी(बिहुड) इस अध्याय को भी आधुनिक कृषि विज्ञान पुष्टि देता है। एक दल धान्य के बाद द्विदल धान्य की बुआई या उसका उल्टा भी करने की भी शिफारीश कृषि वैज्ञानिकों ने की है । इससे जमीन की फसल उत्पाद बढाने की क्षमता में वृद्धी होती है ।

हरितक्रान्ति ने असंख्य जनता की भूख तो मिटाई है, परन्तु रासायनिक खाद, कीटकनाशक औषधियों के उपयोग से भूमि और फसलों में उनका अंश बाकी रहने से जमीन उपजाऊ नहीं रहती तथा बीज में (अन्न) औषधियों का शेष अंश रहने से खानेलायक भी नहीं रहता । इतना की माँ के दूध में भी रसायनों का अंश पाया गया है। ऐसी स्थिति में बिऊड, निसर्गाधारित कृषि, सेंद्रिय तथा हरितकृषि, ऋषिकृषि का महत्व अन्न की गुणवृद्धी के लिए आवश्यक है ।इसके लिए गोबर, गोमूत्र, पंचामृत तथा इनके साथ अलग-अलग वनौषधियों के प्रमाणबद्ध संप्रेषण से लाभ होता है और इनकी शिफारीश भी वैज्ञानिकों ने की है ।

पूज्य विज्ञानमुनिजी ने इन सभी वैज्ञानिक विधियों का मूलरुप में आधार खोजने की कोशिश की है, जो अभिनंदनीय है । इस ग्रंथ के लिए हार्दिक बधाई ।

– डॉ.कमलाकर कांबळे(प्राचार्य)

विलासराव देशमुख कृषि जैव तंत्रज्ञान महाविद्यालय,लातूर

प्राक्कथन

पाठकों के हाथों में इस छोटी सी पुस्तक को देकर मुझे अपार आनन्द की अनुभूति हो रही है । मैं ७५ एकड घर की खेती पर कई बैलों और मजदूरों को लेकर अपने पिता और भाईयों के साथ वर्षों काम करता रहा हूँ । जो व्यक्ति जिस कार्य को करता है, उसकी दृष्टि सब जगह सबके कार्यों में कमियां और विशेषताओं को देखती रहती है । मुझे भी किसी की लहलहाती खेती देखकर उसको समझने की जिज्ञासा पैदा होती थी । प्रशिक्षण केंद्रों में जाकर कृषि सम्बन्धी बातें यन्त्र आदि बडे ध्यान से देखें व सुनें । साथ ही उन बातों के अनुसार भूमिसुधार, शुद्ध बीज, खाद आदि के प्रयोग कर लाभान्वित भी हुआ । मौसम के साथ मुहूर्त का भी अध्ययन किया, जो मुनाफा घाटे में सबसे ज्यादा प्रभावोत्पादक रहा ।

कृषक के साथ मैं एक चिकित्सक भी हूँ । स्वाध्याय काल में मैंने श्री वेदश्रमी की **'वैदिक सम्पदा'** नामक पुस्तक पढी । उसमें चन्द्रमा और कृषि के बारे में कुछ बातें लिखी थी । इसी एक बात को लेकर मैंने वेदादि ग्रन्थों का भी इस विषय को लेकर अध्ययन किया तथा कार्य रुप में परिणत करने लगा । कई साल तक चन्द्रमा के शुक्ल पक्ष कृष्ण पक्ष को मुहूर्त बनाकर अनेक कार्यो पर अनेक वर्ष परीक्षा करता रहा, जिसका परिणाम आपके हाथ में है ।

इस के साथ ही अन्य विषयों पर भी शोध जारी रहा। उससे खोजपूर्ण, अद्भुत अति लाभकारी ग्रन्थ प्रकाशित कर सका, वे ये हैं - १. सर्पदंश चिकित्सा २. कृषिविज्ञान ३.नागयेडा-नागिन-विसर्प, ४. बडा बिच्छु (इंगळी), बिच्छु ५. नखुरडा(चिप्य) ६. घोनस सर्प चिकित्सा (अभी चल रही है।) पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का बचपन में मुझे जो मार्गदर्शन व सहयोग मिला, उन्होंने तो मेरा जीवन ही बदल दिया है। उनके बाद पू.डॉ.ब्रह्ममुनिजी का साहचर्य मिला, जिन्होंने सोने में सुहागे का काम किया । एक ही ग्राम में जन्म होने से इनका इतना सहयोग मिला कि सारा परिवार शैव पन्थ से आर्य परिवार हो गया ।

गुरुकुलों में पढाई कर मेरे भतीजे पं.सुधाकर शास्त्री म.आ.प्र.सभा में उपदेशक रह चुके हैं । बडे पुत्र श्री राजेन्द्र पाटिल आर्य समाज औराद के मंत्री पद को संभाल रहे हैं, तो द्वितीय पुत्र डॉ.रामचन्द्र पाटिल(शास्त्री) लण्दन में आर्योपदेशक हैं। दो भाई कृषक और व्यापारी है । मेरा जन्मस्थान जि.उस्मानाबाद में उमरगा तालुके के अंतर्गत

औराद(गुंजोटी) एक छोटा सा गांव है, जिसे स्वतन्त्रता सेनानियों व गुरुकुलस्नातकों की परम्परा है। इस ग्राम को पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी तथा पूज्य डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने अपने जन्म से अलंकृत किया है। मैं इनका सदा हृदय से आभारी हूँ। अब मैं डॉ.ब्रह्ममुनिजी तथा पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी के साथ गुरुकुल परली वैजनाथ में यथाशक्ति नि:शुल्क सेवा कर रहा हूँ। उपरोक्त सभी महानुभावों के साथ ही इस ग्रन्थ को संशोधित करने और भाषा की दृष्टि से परिष्कृत करनेवाले आर्यविद्वान तथा कन्या गुरुकुल दाधिया(राज.) के आचार्य श्री डॉ.विश्वपालजी वेदालंकार का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। महाराष्ट्र सभा के प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मन्त्री श्री माधवराव देशपांडे तथा वैदिक गर्जना के सम्पादक डॉ.नयनकुमार आचार्य के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, क्योंकि इन्होंने मेरा यह छोटा सा ग्रंथ **'वैदिक गर्जना'** मासिक में **''पारम्परिक कृषिज्ञान विशेषांक''** के रुप में प्रकाशित किया है। साथ ही जिन्होंने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रुप में हमें सहयोग देकर उत्साह बढाया और इस कार्य में सहयोग किया, उनका भी मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

विनीत,

विज्ञानमुनि, स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम,
आर्य समाज, परली-वै. जि.बीड

* कृषि महत्त्व *

वेदों में कृषि का वर्णन एक ज़ीवन दर्शन या फिलोसफी के रुप में प्राप्त होता है। 'कृष्' धातु से निष्पन्न कृषि शब्द कर्षण करने, खींच कर बाहर निकाल लेने के अर्थ में प्रयुक्त है। जो अन्दर छिपी शक्तियों को खींच कर बाहर निकालने की प्रक्रिया है, उसे ही कृषि कहते हैं। वेदों में कृषक और कृष्टि शब्द यही अर्थ देते हैं। जो अपने अन्दर की छिपी शक्तियों को योग द्वारा प्रकट करे ऐसा पूर्ण विकसित मनुष्य कृष्टि कहा गया है। इसी प्रकार जो धरती के अन्दर छिपी शक्तियों को बाहर खींचने में निपुण हो उसे कृषक कहा गया है। इसीलिए वेद कृषि और योग दोनों को समान मानते हैं और एक मन्त्र के द्वारा ही दोनों का साथ-साथ वर्णन करते हैं। शास्त्रों में मनुष्य शरीर को क्षेत्र या खेत कहा गया है, जिसमें जीव पुण्य-पाप के बीज बोकर अपना भाग्य बनाता, बिगाडता है। कृषि कर्म को भली भाँति समझकर मनुष्य अन्नादि से संसार का पालन करता है और योग के द्वारा अपना लोक और परलोक संवारता है। दोनों ही दु:ख से छुडाने में सहयोगी हैं।

यजुर्वेद में योगियों के समान कषि कर्म करने का वर्णन किया है। स्वामी दयानन्द इसके भावार्थ में लिखते हैं - 'जैसे योगी लोक नाडियों में समाधि योग से परमेश्वर की उपासना करते हैं, वैसे ही कृषि कर्म से सुख प्राप्त करें।' (वेदगोष्ठी-'वेदों में कृषि'-अजमेर २००३)

कृषि महत्त्व

हमारा भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है । इस देश की ७५% जनता गावों में रहती है । गांवों में किसान रहते हैं, जो कि अनपढ होते हैं । किसान यह जानता है कि उसकी फसल मिट्टी में पैदा होती है, सावधानीपूर्वक बीज बोने से फलता-फूलता है और असावधानी से बोया हुआ बीज नष्ट भी हो जाता है । कृषि के साधनों में सबसे पहले मिट्टी फिर बैल, हल, बीज, खाद और पानी हैं । इनके अतिरिक्त तीन चीजें और हैं- 'हवा, सूर्यप्रकाश और चन्द्रप्रकाश।' इन साधनों को प्राप्त कर यदि किसान परिश्रम करता है, तो उसकी पूंजी बढेगी, नहीं तो घटेगी।

कृषि विज्ञान-यह विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है । इसमें केवल कृषिसम्बन्धी बातों पर ही विचार किया जाता है । क्योंकि कृषि ही हमारी खाद्य समस्याओं की पूर्ति के साथ वस्त्र भवन आदि में भी सहयोगी है । कृषिविज्ञान का उद्दिष्ट मिट्टी का परीक्षण कर खाद की मात्रा निर्धारित करना तथा फसल का निर्णय करना साथ ही मन्त्रों का ज्ञान देना है । अच्छे और संशोधित बीजों का चुनाव कर औसत पैदावर में आश्चर्यजनक वृद्धि कर हरितक्रान्ति लाना, कृषि में हानि पहुँचाने वाले कीट पतङ्गों को नष्ट करने का उपाय करना, फसलों के रोगों का निदान करना कृषीविज्ञान के कार्य हैं ।

यद्यपि वैज्ञानिक अनुसंधान कर भी रहे हैं, परन्तु उस पर जितना व्यय किया जाता है तो परिणाम शून्य के बराबर है । रासायनिक खादों और कीटनाशकों का इतना प्रयोग किया जाता है कि फलों और सब्जियों में स्वाद ही नहीं रहा, ये सब विषयुक्त हो रहे हैं।

कृषि अनुसंधान की प्रयोगशालाओं में अधिकतर उपकरण विदेशी हैं । जो यहां निर्मित हैं, वे भी उन्हीं की अनुकृति है, जो कि बहुधा हानिकारक भी सिद्ध होते हैं । प्राचीन पद्धति को तिरस्कृत कर उसे नष्ट कर दिया है । जब कि देशी खाद, देशी औषधियां, बैलों द्वारा की जानेवाली खेती आदि सर्वोत्तम पद्धतियाँ जिन्हें विकसित करना चाहिये था, उन्हें भुला दिया है । अब तो बीज भी विदेशों से मंगवा कर किसान को ऐसा पराधीन कर दिया है । जिस दिन विदेशी बीज नहीं देंगे उस दिन क्या होगा ? इसकी किसी को चिन्ता नहीं ।

कृषि, वेद, ऋषि तथा विद्वानों का कथन :-

१) कृषिकर्म द्वारा सुखों को प्राप्त होवे। (यजु.भाष्य १२/६७)

२) हे मनुष्यो ! ध्यानशील बुद्धिमान लोग हलों, जुवा, बखर आदि को युक्त करके

सुखों के साथ विद्वानों में अलग विस्तार युक्त करते हैं, वैसे सब लोग इस खेती कार्य का सेवन करें। (यजु. १२/६७.)

३) किसान लोगों को उचित है कि मोटी मिट्टी अन्न आदि की उत्पत्ति से रक्षा करने हारी पृथ्वी की अच्छी प्रकार से परीक्षा करके हल आदि साधनों से जोतें । भूमि एक समान कर सुन्दर संस्कार किये बीज से उत्तम धान्य उत्पन्न करके भोगें । (यजु भाष्य. ३०/११)

४) **'इरायै कीनाशम्।'** – अन्नादि के बढानेवाले, किसान, अर्थात् खेतिहर उत्पन्न कीजिये । (यजु.भाष्य १६/३८)

५) **'आतप्याय च नमः।'** पसीना बहानेवाले, धूप में रहने वाले वा खेती आदि प्रबन्ध करनेवाले को अन्न दो। (यजु.भाष्य १६/३८)

६) **कृषि विद्वान्**–कृषि विषय में कहावतें, मुहावरों के माध्यम से कृषि ज्योतिष् मुहूर्तनीति आदि सभी विषयों को इन्होंने स्पर्श किया है । ये कहावतें आज भी ग्रामीण जन–जीवन में बस गयी हैं एवं समय के साथ सत्य की कसौटी पर खरी उतरी हैं। अनपढ ग्रामीण सामान्य महिलाओं एवं पुरुषों के इस सामान्य एवं कहावतजन्य ज्ञान को देखते हुए एक अमेरिकन विद्वान ने लिखा है कि भारत के अनपढ नागरिक गरीब किसान भी कृषि से संबंधित विज्ञान से सम्पन्न हैं एवं वे ज्ञान को अपने जीवन में व्यवहार में लाते हैं। खेत में बीज बोने की मात्रा और दाने से दाने की दूरी के विषय में 'घांघ' कहते हैं–

'सन घना, बन बेगरा मेंढक कूदे ज्वारा ।
पैर–पैर पर बाजरा करें दरिद्र पारा ।
हरिन फलांगन कांकरी, पैर–पैर कपास,
कहियो जाय किसान से बावै धन उरवार ।
जौ, गेहूं सात पसेर, मटर के बिघह साढे सेर ।
बोवे चना पसेरी तीन, दो सेर बिगहा जोन्हरी कीन ।।'

सधन सनई, मेंढक की छलांग पर ज्वारी, अपना पैर जितना ८ १/२'' के अन्तर पर बाजरा, हरिन के छलांग पर कांकडी, एक कदम पर ढांग (तीन फुट) पर कपास बोना चाहिये। ईख गन्ना खूब घना बोना चाहिए।

७) **बैल**–कृषिकार्य में अच्छे बैल उचित सहायता दे सकते हैं । बैलों की पहचान के विषय में भी घाघ का कहना है –

सींग मूंढे, माथा उठा, मुंह का होवे गोल,
रोम नरम चंचल करण, तेज बैल अनमोल ।
पूंछ लम्बा और छोटे कान, यह बलद मेहनती जान
पतली पडुली मोटी रान, पूंछ होई मूई में तरियान
जाके छोटो गेसी गोई, बाको ताकै और सब कोई ।।

* अच्छा बैल कैसा होता है ? – जिस बैल के सींग मुंढे, माथा रुंद उठावदार, मुंह गोल, बाल नरम, छोटे–छोटे चंचल कान, पूंछ लम्बा और पतला, पीठ पर फिरनेवाली, ऐसा बैल अनमोल और मेहनती होता है ।

८) 'जब शैल खराखर बाजे, तब चना खूब गाजे ।।'

जब जुताई के समय खेत में ढेले रहते हैं, तब शैल बखर फाल खराखर बजती है, ऐसी जमीन में चने का उत्पादन मिलता है ।

९) कृतिका कोरी गई तपा तपे जेठ, छाव अवन की जिये रहिये पर के हेत।

कृषी के लिये कृतिका नक्षत्र में वर्षा होना लाभदायक है । यदि कृतिका नक्षत्र में तपन हो तो वर्षा ऋतु में बहुत कम वर्षा होती है, ऐसे काल में मनुष्य किसी बरगद की छाया में बैठकर समय यापन करे ।

१०) 'पानी बरसे आधा पूस, गेहूं आधा आधा भूस ।'

यदि पौष मास के मध्य में वर्षा होती है, तब गेहूँ का उत्पादन बढता है । महाराष्ट्र में कहावत है – 'पडला तर उत्तरा, भात खाईना कुत्रा' उत्तर भारत में कहावत है – 'वायु चलेगी उत्तरा, भांड पियेंगे कुत्रा ।' जब वर्षा ऋतु में उत्तर की मानसून हवा चलेगी, तब वर्षा खूब होगी और धान की फसल अच्छी होगी, इतनी अच्छी होगी कि कुत्ते भी चावल के मांड को पीयेंगे ।

११) 'आगे की खेती आगे आगे, पीछे की खेती भागे जागे ।'

जो समय पर बीज बोयगा उसकी खेती अच्छी होगी । पीछे बोने वाले की खेती भाग्य भरोसे होती है ।

१२) 'आगाई सदा सवाई ।'

महाराष्ट्र में इसे यों कहते हैं– खरीप पेरावे धावून, रब्बी पेरावे राहुन !

१३) खेती करे सांझ घर सोवे । काटे चोर हाथ धरी रोवे ।।

खेत को छोडकर जो किसान रात को घर में सोयेगा, खेत की रखवाली नहीं करेगा

तो उसकी फसल चोर ले जायेंगें ।

१४) **गोबर मैला पाती सडै, तब खेती में दाना पडे ।**

गोबर, मैला, कचरा, भूसा और वृक्षों की पत्तियों को सडाकर, खाद बनाकर उस खाद को खेत में देने पर ही अच्छी फसल होती है ।

१५) **नीमा अधर निमोली सूके, काल पडे पर धू नहीं पूके,**
आधो पाक्यो आधा सूके, कढेक निपजे, कढेक डूले ।।

यदि नीम के पेड पर निंबोली सूखने लग जायें तो सूखा जरुर पडेगा किन्तु कहीं कहीं कुछ उपज भी होगी अर्थात् कहीं अकाल ओर कहीं कुछ फसल होगी ।

१६) **आषाढ मास पुनि गौना, ध्वजाना बांधि के देखो पौना ।**
जो ये पवन पूरब से आवे, उपजे अन्न मेघ झर लावे ।।
अग्नि कौन जो बहे सीमरा, पडे काल दु:ख सहे सरीरा ।
दक्षिण बहे जस थल अल गीरा, ताई समय जुझे बड गीरा ।
तीरथ कोना बूंद ना परे, राजा परजा भूख न मरें ।
पश्चिम बहे नोक कर जानो, पडो तुषार तेज कर आनो ।।

आषाढ मास की पूर्णिमा के दिन ध्वज बांधकर पवन परीक्षा की जाती है । उसका फल इस प्रकार कहा जाता है – 'यदि हवा पूर्व दिशा से चले, तो वर्षा और उपज अधिक होगी।' यदि आग्नेय कोन से चले, तो अकाल पडेगा । यदि दक्षिण से चले, तो वर्षा अच्छी होगी, किन्तु युध्द होने की सम्भावना रहेगी । यदि दक्षिण पश्चिम के कौने से हवा आयेगी, तो अकाल पडेगा । यदि पश्चिमी हवा चलेगी, तो मौसम अच्छा रहने पर भी पाला पडने की सम्भावना रहती है ।

१७) **वाताय कपिला विद्युत्।** – मेघों में (कपिला) काले रंग की बिजली चमकने पर वायु चलती है और अकाल पडता है ।

१८) **आतपाय तु लोहिता।**–लाल रंग की बिजली चमकने से गर्मी बढती है।

१९) **पीता वर्षाय विज्ञेया।** – पीली विद्युत से वर्षा होती है ।

* **वेदों में कृषि का वर्णन –**

२०) क्षेत्र स्येपते मधुमन्तमुर्मि धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व ।
मधुश्चुतं घृतमिव सुपूमृतस्य नः पतयो मृलयन्तु ।। (ऋग्. ४/५/७२)

भावार्थ – जैसे बुद्धिमान खेती करनेवाले जन सुन्दर शुद्ध गन्नों को उत्पन्न करके सबको आनन्द देते हैं, वैसे ही खेती करनेवाले जनों की उत्तम प्रकार से रक्षा करके सदा उत्साह युक्त करें ।

२१) **शुनं वाहाः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।**
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गया ।। (ऋग्.४/५७/४)

भावार्थ – खेती करनेवाले जन उत्तम हल आदि साधन वृषभ (बैल) और बीजों को इकट्ठे करके खेती को उत्तम प्रकार से जोत कर उनमें उत्तम अन्नों को उत्पन्न करें ।

२२) **अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित् कृषस्व, वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः।** (ऋग्.३/४/१३)
भावार्थ – जुआ मत खेलो, कृषि करो, तथा आदर के साथ धन कमाओं । इस प्रकार वेदों में बहुत मन्त्र कृषिसम्बन्धी आये हैं ।

२३) **कृषि धन्या कृषि मेध्या जन्तूनां जीवनं कृषिः ।** ('ऋषि पराशर'-८)
खेती संपत्ति और मेधा प्रदान करती है, कृषि सभी प्राणियों के जीवन का आधार है ।

२४) **कृषिर्वेद विनाशाय, कृषिर्वेद विनाशिनी ।**
शक्तिमान् एवं कुर्यादशक्तस्तु कृषिं त्यजेत् ।। (बोधायन ऋषि स्मृति)
ब्राह्मण यदि समर्थ है, तो वेदों के अध्ययन के साथ कृषि कार्य को भी कर सकता है ।

२५) **हलमष्टा गवं प्रोक्तं षड्गवं व्यवहारिकम् ।**
चतुर्गवंनृशंसानां द्विगवं तु गवाशिनाम् ।। (ऋषि पराशर ७५)

आठ बैल वाला हल सामान्य उपयोग में, छह बैलवाला कृषि कार्य में, चार बैलवाला हल श्रेष्ठ जनों के कार्य में उपयुक्त होता है । एक या दो बैल वाला हल तो बैल को ही मार डालता है ।

२६) खरीप या आषाढ की कृषि को अच्छी फसल पाने के लिये मृगशिरा, मूला, पुनर्वसु नक्षत्र में बोने का विधान 'पाराशर ऋषि' ने किया है ।

* **रब्बी–** रब्बी का बीज बोने के लिये हस्त और चित्रा नक्षत्र के दिन शुभ हैं ।

* **बीज वपन –** ऋषि पाराशर ने गार्ग्य मत को प्रकट करते हुए लिखा है कि उत्तम बीजों के संग्रह के लिये विशेष ध्यान देना आवश्यक है । इन बीजों को सुरक्षित जगह रखना चाहिए । बीज रखने का समय माघ फाल्गुन (जनवरी–फरवरी) है । एक बार रखकर उसको समय से पहले स्पर्श नहीं करना चाहिए । फसलों के शुभ अशुभ काल, सुरक्षित संग्रहालय, कृषि सिंचन व्यवस्था, गोबर का खाद और कृषि सम्बन्धित उत्सव यज्ञ आदि का विस्तार से उल्लेख किया है ।

* * *

कृषि और चन्द्रमा ।

चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे शुभे दिने ।

आरभेत् तु पुरश्चर्या, हरौ सुप्तेन चाचरेत्।। (शैवतन्त्रसारः साधना)

चन्द्रमा व नक्षत्र अनुकूल हों, शुक्ल पक्ष हो, ऐसे किसी शुभ दिन मन्त्र पुरश्चर्या करना श्रेयस्कर है ।

नवो नवो भवसि जायमानो ऽ ह्नां केतुरुषसामेष्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो विदधास्यन्यान्प्रचन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः ।

(अथर्व-७/८०/९, ७/८१/२)

भावार्थ – चन्द्रमा कलाओं की वृद्धि व ऱ्हास के द्वारा ही नया नया प्रतीत होता है । 'शुक्ल पक्ष' में यह प्रतीची दिशा में दिन की समाप्ति पर उदित होता है । 'कृष्ण पक्ष' में उषा काल के अग्रभाग में दिखता है । चन्द्र तिथियों के अनुसार ही यज्ञ चलते हैं । चन्द्रमा अपनी 'सुधामयी' किरणों से हमारे आयुष्य को बढाता है । चन्द्रमा को अथर्ववेद में पिता और पृथ्वी को माता कहा है । चान्द्रमासों से ही ऋतुओं का निर्धारण होता है।

पौर्णमासी के दिन चन्द्रमा पूर्ण होता है । इस दिन वह सोलह कलाओं से युक्त होता है। हमें भी सोलह कला सम्पन्न बनने की प्रेरणा पूर्णिमा से प्राप्त होती है । वे सोलह कलायें हैं – प्राण, श्रद्धा, पंचभूत, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक व नाम । इस पूर्णिमा के प्रकाश में शक्ति, ज्ञान व निर्मलता का समन्वय है।

१) **शक्ति** – शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा जब अपनी कलाओं से बढता है तो इस पृथ्वी पर जितने जीव-जन्तु औषधि वनस्पतियां हैं, उन सभी में शक्ति की वृद्धि होती है ।

२) **ज्ञान** – चन्द्रमा के प्रकाश से आह्लाद मिलता है । आह्लाद सात्विक होता है। यह सात्विकता ज्ञान में सहायक है ।

३) **नैर्मल्य** – तापरहित शुद्ध शुभ्र ज्योत्स्ना से जो निर्मलता औषधि वनस्पतियों में जाती है वह निर्मल आकाश में तारों और चन्द्रमा से निरन्तर प्रवाहित होती है ।

* **सूर्यकान्त मणि और चन्द्रकान्त मणि –**

सूर्यकान्त मणि को वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है । ये सौर ऊर्जा की प्लेटें सूर्य के धूप को विद्युत् में परिवर्तित कर देती हैं, जिससे ट्यूबवैल (नलकूप) की मोटरें, हवा के पंखे, बल्व आदि अपना काम करते हैं ।

चन्द्रकात मणि का नियम था । वह चन्द्रमा की किरणों के संसर्ग में आकर

जलधारा प्रवाहित कर देती थी। आज ऐसे साधन हैं, जो वायुमण्डल में से जल को एकत्रित कर लेतें हैं। रात को A.C. चलता है, तब एक नलकी में से निरन्तर पानी प्रवाहित होता रहता है । फ्रिजर की गैस से जब पानी जमता है, तो वह वातावरण के पानी को निरन्तर अपनी ओर आकर्षित कर उसे बर्फरुप में परिणत करता रहता है । अहमदाबाद के एक मन्दिर में इसी गैस का उचित विधि से प्रबन्ध करके एक शिवलिंग बनाया । उस शिवलिंग पर निरन्तर बर्फ बन-बन कर चढती जाती है और वह कश्मीर के अमरनाथ के शिवलिंग की तरह बर्फ का शिवलिंग दिखाई देता है, जिसकी भोलेभाले लोग श्रद्धा से पूजा करते है । सुना करते थे कि रावण के महलों में हवा बुहारी देती थी और इन्द्र पानी भरता था। इन्द्र कहते हैं, सूर्य को । आज सौर उर्जा पानी भरती है, वायु द्वारा बुहारी देने के साधन बन चुके है ।

चन्द्रमा को औषधिपति(पतिरोषधीनाम्) जैसे शब्दों से सभी औषधियों का स्वामी कहा है। ऐसे भावार्थ से युक्त एक मन्त्र है -

प्रयच्छ पर्शु ..... वीरुधो भवन्तु । (अथर्व. १२/३/३१)

भावार्थ - इस पृथ्वी पर जितनी भी औषधियां हैं, उन्हें नष्ट न करते हुये ऊपर से ले, औषधियों के मूल को नष्ट न करे, यदि मूल की भी आवश्यकता है, तो उसको दूसरी जगह बीजों आदि के द्वारा लगाकर ले ।

फसल और औषधियों के लिये चन्द्रमा वरदान रुप में -

औषध-वन्ध्या स्त्री यदि पुष्य नक्षत्र के शुक्ल पक्ष में शुंग को लाकर रक्खे और चूर्ण करके जल में मिलाकर पीवे तो अवश्य गर्भधारण हो । (निघंटु आदर्श पृष्ठ-४७५)

चन्द्रप्रकाश से लाभ - किसान खाद, पानी, बीज की व्यवस्था करके भूमि को अच्छी तरह जोत कर उसको चन्द्रमा की किरणों से रस युक्त करके यदि बीज बोता है तो उसकी फसल उसे भरपूर लाभ देनेवाली सिद्ध होती है । जो इस विद्या को जानते हैं, वे इसका पूरा लाभ उठाते हैं । इस संदर्भ में वेद में कहा है -

'यथा नः सुभगा ससियथा नः सुफला सारी।'(ऋग्.२/५७/६)

भावार्थ - हल का फाल भूमि में पर्याप्त नीचे जाने वाला हो, भूमि को गहरी खोदने वाला हो, तो सूर्य चन्द्रमा की किरणों से गहराई तक सम्पर्क होगा और वह उपज शक्ति से सम्पन्न होगी। हमारे लिये उत्तम धनधान्य से ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाली होगी।

समान्यतया किसान वर्षा का मुहूर्त रखते हैं या अन्य विधि से जल का प्रबन्ध हो सकें तो समयानुसार फसल बो देतें हैं । वे तिथि पक्ष आदि का कोई ध्यान नहीं देते ।

जो ठीक पक्ष तिथि में बोई होगी, तो वह फलवती व धनवती फसल होगी और जो इनकी तरफ ध्यान न देकर अन्धाधुन्ध अज्ञानपूर्वक बोई होगी, तो कभी होगी और कभी नहीं होगी। अर्थात् अज्ञान में रहते भी समय ठीक हो तो फल भी ठीक ही मिलेगा नहीं। इसके विपरीत भी होगा।

शुक्लपक्ष में जब प्रतिपदा पूर्णिमा तक चन्द्रकलायें बढती हैं, तब सारे वृक्ष-वल्ली, औषधि, फसल आदि को पृथ्वी से भरपूर रस मिलता है। जमीन नमी से युक्त हो जाती है। कृष्ण पक्ष में इतनी नमी नहीं रहती। इसलिये औषधियों को रस कम मिलता है।

*** प्रमाण -**

१) कृष्ण पक्ष की अमावस्या को समुद्र में भाटा (ज्वार भाटा) आता है। समुद्र का पानी अन्दर कई किलोमीटर चला जाता है। अनुमानानुसार वह पानी सूक्ष्मता से जमीन में ही चला जाता है।

२) मुझे गुडुची औषधि का सत्व निकालना था। अमावस्या को उसके टुकडे कर एक को चबाया तो सत्व तो नहीं निकला कुछ कडवा पानी जरुर हासिल हुआ।

३) शुक्ल पक्ष में मैंने जमीन में दो बार हल चलाया और दो बार बखर चलाया। इस कार्य से जिस घास को निकलकर जड सहित बाहर आना था, वह नहीं आई इसके विपरीत उसकी जडें टूट- टूट कर और अधिक जम गयी। चन्द्रमा उसका पिता है, जो रस प्रदान कर अमृत पिलाकर जीवित रखता है, वृद्धि करता है। यह ज्वार का प्रभाव है व जो समुद्र में चन्द्रमा के कारण आता है।

४) एक बार कृष्ण पक्ष में हल चलाया, तो घास मानों अपने को दुर्बल समझकर जड सहित उपर आ गई और चुन-चुन कर एक तरफ रख दिया। यह कृष्ण पक्ष में समुद्र के भाटे का परिणाम है। जमीन शुष्कता धारण कर लेती है।

५) किसी वृक्ष से कृष्ण पक्ष में यदि लकड़ियाँ तोडेंगे, तो उनमें घुन लगेगा, वे खराब हो जायेंगी और शुक्ल पक्ष में काटेंगे, तो वे वैसी ही रहेंगी, कीट आदि नहीं खायेंगे। यह सुपरीक्षित है।

६) जब आकाश में बादल हो और माँ बच्चे को नहलाने लगे, तो मैल निकलने लगता है, कुछ वातावरण उमस युक्त हो जाता है, यह पंचभूतों का परिणाम है। वैसे ही चन्द्रमा का शुक्ल पक्ष में होता है।

७) बृहदारण्यकोपनिषद्(६/३/१) में लिखा है कि महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये

सूर्य के उत्तरायण में आने पर शुक्ल पक्ष की शुभ तिथि को यज्ञ करना चाहिये ।

८) शुक्ल पक्ष में उत्तम तिथि, करण, मुहूर्त एवं नक्षत्रों में कर्णवेधन उचित है।(धन्वंतरी)

९) भारतीय परम्परा और संस्कृति में एक महत्व की बात है, कि कोई भी शुभ कार्य, उद्योग व्यवसाय का शुभारम्भ, विवाहादि सभी संस्कार, गृहप्रवेशादि संस्कार सभी कार्य यज्ञपूर्वक किये जाते हैं और इनमें शुभ मुहूर्त शुक्ल पक्ष के किसी भी दिन को माना जाता है । किसी विशेष परिस्थिति में ही ये कार्य कृष्ण पक्ष में किये जाते हैं ।

१०) कुछ विशेष तिथियां भी हैं, जिन्हें शुभकार्यों में विशेष महत्व दिया जाता है। जैसे फाल्गुन शुक्ला द्वितीया (फलेरा दोज) वैशाख शुक्ला तृतीय (आखतीज) महाराष्ट्र में गुडी पाडवा, विजया दशमी कार्तिक की प्रतिपक्ष आदि शुभ, सिद्ध और यशोदायिनी पवित्र मुहूर्त है ।

११) ज्योतिष के मुहूर्तों को न मान कर वास्तविक शुभ मुहूर्त है परिश्रम और शुभदिन! शुक्ल पक्ष का कोई भी दिन ! चन्द्रमा का बढता प्रकाश धन धान्य को बढाता है।

१२) 'ऋषि पराशर' ने लिखा है –

न बापयेत् तिथौ रिक्ते क्षीणे सोमे विशेषतः ।

श्रीमद्भगवद्गीता में लिखा है –

पुष्णामि चौषधी सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।

तैतिरियोपनिषद् में लिखा है –

चन्द्रमसावाव सर्वाणि ज्योतिषि महियन्ते ।

अर्थात् – चन्द्रमा का प्रकाश ही औषधियों को बढाता है ।

१३) कृष्ण पक्ष में बोई हुई फसल रोगों का शिकार हो जाती हैं और उत्पादन कम होता है । शुक्ल पक्ष में बोने पर ऐसा नहीं होता ।

१४) यदि शुक्ल पक्ष का पूरा लाभ लेना है, तो अमावस्या के बाद तीन दिन छोडकर बोना चाहिये, क्योंकि इन दिनों पृथिवी की दशा एक माहवारी वाली स्त्री जैसी होती है । चौथे दिन से पौर्णिमासी तक बोने से निरोग और अधिक फसल होगी । दवाई छिडकने की जरुरत नहीं पडेगी।

१५) महाराष्ट्र में इस बात को लगभग सभी किसान जानते हैं कि यदि कृष्ण पक्ष में ज्वार बोयेंगे, तो भुट्टे पर एक तरफ दाना आता है, दूसरी तरफ नहीं । चीटियां उस भुट्टे के फूल खाकर दाने आने नहीं देती । भुट्टे काले आते हैं । ज्वार टेढी मेढी गिर जाती है खडी नहीं रहती। गेंहूँ कृष्ण पक्ष में बोयेंगें तो उस पर काला, लाल या तांबेरा रोग गिरता है और

उत्पादन कम होता है । गन्ना कृष्ण पक्ष में लगाया, तो खाने लायक नहीं रहता, उत्पादन घटता है । गन्ने की सभी कांडियाँ लाल हो जाती हैं । रस कम हो जाता है।

१६) कपास को यदि शुक्ल पक्ष में बोया जाता है, तो वह निरोग रहती है । यदि कृष्ण पक्ष में बोओंगे तो उसके कुछ फल अच्छे आयेंगे, कुछ कीडों से ग्रसित रहेंगे और कुछ अधपके रह जाते हैं, कुछ पक कर खुल भी जाते हैं, पर उनमें कपास नहीं रहता । इसलिये शुक्ल पक्ष ही लाभकारी है ।

१७) **सब्जियाँ** – सब्जियों को भी यदि शुक्ल पक्ष में लगाया, तो वे निरोग, स्वादिष्ट तथा उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है । उन्हें देखने और खाने में भी आनन्द आता है । यदि इन्हीं सब्जियों को कृष्ण पक्ष में लगाया जाता है, तो उनपर मावा, कीडें आदि आक्रमण कर देते हैं, पौधों को उखाड-उखाड कर फेंकना पडता है ।

१८) एक बार मैंने खेते में आम की चार गुठली बोई, उनमें से तीन शुक्ल पक्ष में अंकुरित हुई और एक कृष्ण पक्ष में । तीनों में मोहर और फल खूब मात्रा में लगते हैं । परन्तु चौथा लगभग रोगग्रस्त रहता है, पुष्प, फल या तो आयेंगे नहीं, या रोगी होने से गिर जाते है। इसलिए वृक्ष भी शुक्ल पक्ष में उगे हुये ठीक रहते है ।

यदि कृष्ण पक्ष में फसल बो दी और खाद दवाई से अच्छी हो भी गई, तो बाद में हिसाब करने पर पता लगता है कि जितनी पैदावार उतना ही खर्चा हो कर बराबर हो गया ।

इस विषय में विस्तार से अन्य बहुत प्रमाण अपने अनुभव के तथा दूसरों के अनुभव के खोजने पर मिल जाते हैं । अन्य उदाहरणों से पहले सूर्य और चन्द्रमा के गहन अध्ययन से निम्न बातों का पता चलता है।

* * *

-: वेदों में कृषी का महत्त्व :-

वेदों में कृषि विज्ञान का प्रारम्भ कृषि के मनोविज्ञान से होता है और पश्चात् तत्सम्बन्धी अन्य विज्ञान का वर्णन है । ऋग्वेद का एक सम्पूर्ण सूक्त इसी के अर्पण किया गया है । इस सूक्त का प्रारम्भ क्षेत्रपति से होता है । प्रथम मन्त्र में कहागया है कि हम लोग क्षेत्रपति के साथ हितैषी भाव से मिलकर कृषि सम्पदा अथवा जीवन संग्राम पर विजय प्राप्त करें, हमारे गौ अश्वादि का पोषण हो वह क्षेत्रपति हम पर ऐसी कृपा करे । दूसरे मन्त्र में ऋतपति लोगों अर्थात् खेती के नियमों को समझनेवाले विद्वानों से प्रार्थना की गई है कि वे ऐसी कृपा करें कि जिससे हमारे क्षेत्रपति लोग भूमि से ऐसे उत्तम पदार्थ उत्पन्न करें जैसे दूध देनेवाली गाय से आरोग्यप्रद दूध प्राप्त होता है। (वेदगोष्ठी-ग्रन्थ, अजमेर २००३)

बिऊड (जडझूंडी)

खेती उत्पादन के लिये बिऊड विधि बहुत लाभकारी है । यह शब्द महाराष्ट्र का है । हर वर्ष खेत में फसल बदल-बदल कर एक साल एक दल की फसल बीज दूसरे वर्ष द्विदल फसल होनी चाहिये । इसे छह-छह मास में भी बदल सकते हैं । एक दल बोने के बाद, उगने पर एक पत्ता आता है और द्विदल में दो पत्ते, उगने के बाद आते हैं । इस विधि को बिऊड कहते हैं । ऐसी विधि से फसल लेने पर रोग नहीं आते । यदि हर वर्ष एक ही विधि की फसल लेंगें, तो वह रोगी होने की सम्भावना रहती है । ऐसी फसल में उसे खानेवाले किटाणु अधिक हो जाते हैं और रोग की मात्रा बढ जाती है । इस लिये हर वर्ष फसल बिऊड विधि से बोना लाभदायक है । एक दल की जड गहरी नहीं जाती और द्विदल की जड जमीन में गहरी जाती है। इस लिये दोनों फसलों में अन्तर है । क्योंकि एक दल के खाद का लाभ द्विदल को मिल जाता है और द्विदल के खाद का लाभ एक दल को । इसलिये रोगनाशक इस बिऊड विधि के बहुत लाभ है ।

रासायनिक खाद :-

यह खाद कृत्रिम विधि से बनता है । इसमें जैव का सम्बन्ध नहीं, बल्कि जीव नष्ट हो जाता है । वैज्ञानिक कहते हैं - रासायनिक खाद से जमीन की शक्ति नष्ट हो जायेगी । जमीन के उपजाऊ कीट मर जायेंगे । इस अन्न को खाकर मनुष्य रोगी हो रहे हैं । बहुत हानि हो रही है ।

जैविक खाद :-

यह खाद जन्तुओं के मरने से, उनके विष्ठा आदि से होता है । यह पंच महाभूतों से बना प्राकृतिक खाद है, जो लाभकारी कीटाणुओं से युक्त है । गांडक-केचूएँ, गोम, काजवे, वीरबहुटी, मृगनक्षत्र के कीडे, गोगलगाय, गोबर के कीटाणु, मुंगे, भ्रमर, महांडोळ तथा बिना हड्डी वाला दो मुहां साप । ये सभी जमीन के वासी हैं । सभी सर्प आदि कार्बन वायु लेते हैं और ऑक्सीजन छोडते हैं । वृक्षों में पीपल (अश्वत्थ) और तुलसी भी दिन रात ऑक्सीजन छोडते हैं, इसलिये इनको उखाडना नहीं चाहिये और जीवों को मारना नहीं चाहिये । यह जीव वृक्ष लाभकारी हैं । गोबर, गोमुत्र या कम्पोष्ट खाद से जमीन के जीव मरते नहीं बल्कि इस खाद से उनकी उत्पत्ति अधिक होती है और फसल को बहुत फायदा होता है । अत: जैविक खेती में कृषि और पशुपालन दोनो

अभिन्न घटक हो गये हैं ।

हरित क्रान्ति का भ्रम :-

जब भारत स्वतन्त्र हुआ, तब अन्न की कमी थी । विदेश से गेहूँ मंगवाना पडता था । खेती के क्षेत्र में हरित क्रान्ति आ गई और सारा चित्र बदल गया । अब भारत में अन्न पर्याप्त है । हरितक्रान्ति क्या है ? संकरित बीज, रासायनिक खाद और कीटनाशकों का उपयोग तथा भरपूर जलसिंचन किया जाता है । यंत्र सामग्री के उपयोग से हरित क्रान्ति होती है । कुछ समय के लिये गेहूँ धान की प्रचुर मात्रा में उपज हो गई, लेकिन परिस्थिति बदल रही है । नये साधनों से उत्पादन बढा, क्षेत्रफल बढा और खर्चा बढा । रासायनिक खादों से भूमि की उर्वराशक्ति ६० प्रतिशत रह गई है । जल का स्तर नीचे गया और जमीन, पानी, हवा में प्रदूषण बढ गया है । इसका परिणाम उत्पादन घटने लगा। सब्जियों की पौष्टिकता कम हो गई और खाद्य पदार्थों से विष पेट में जाने लगा है।

हरित क्रान्ति में जीवाणुओं की, गौओं की और किसानों की हत्या के स्पष्ट उदाहरण हैं । थोडी सी मिट्टी लेकर यदि यन्त्र से देखें, तो लक्षावधी जीव दिखाई देंगे। अत: खेत की मिट्टी निर्जीव नहीं है । इसमें दोनों प्रकार के जीव हैं, फ़सल के पोषक जीव तथा फसल को नष्ट करनेवाले । प्रकृति में पोषक जीवों को बढाने और रोग निर्मापक जीवों को नष्ट करने की क्षमता है । हरित क्रान्ति ने इस क्षमता में बाधा डाली है । रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं से फसल के पोषक जीव नष्ट हो गये हैं तथा रोग निर्माण करनेवाले जीव बढ गये हैं । वैज्ञानिक कहते हैं कि नये नये रोग निर्माण करने वाले जीव तीन सौ प्रतिशत बढ गये हैं । अब एक से बढ कर एक उच्चतम कीटनाकशकों के प्रयोग से खर्चा बढ गया हैं ।

भारत में किसी भी ग्राम में जाकर देखा जाये, तो पता चलता है कि दिन प्रतिदिन गौओं की संख्या कम हो रही है । खेती के लिये बैल नहीं मिल रहे हैं । अच्छा बैल दो लाख रुपये तक मिलता है । गाय-बैल के बिना गोबर गोमुत्र कहां से मिलेगा ? इसलिये जैविक खाद के लिये गौ बैल को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय, तभी भारत सुखी हो सकता है ।

नैसर्गिक खेती :-

इस जगत् में जो खेती योग्य जमीन है, उसमें परिश्रम करके बीज बोकर उत्पादन करना । ऐसी जमीन में पहली खेती है, वृक्षों की जैसे आम, इमली, जामुन, औदुम्बर,

पीपरी, अश्वत्थ, बड, कवट, बेल, सीताफल, रामफल, बेर, आंवला, अमरुद, अनार, फिरंगी इमली, जंगली वृक्षों में - धामन, कारी, यरमोनी, चारोली, मोह इत्यादी हैं ।

वल्ली में गुंज, गुडमार, जंगली प्याज, जांगड, दांगड, देव दांगड, उतरंड बेल, बडी कामोनी आदि । इन वृक्ष वल्लियों के लगाने से ये हमें सारे जीवन फल देते हैं । ऐसे पौधे वर्षा पर निर्भर करते हैं । इसलिये जितना उपलब्ध हो सके, उसी में संतोष करना है ।

दूसरी नैसर्गिक खेती - अन्न आदि जमीन तैयार करके बोतें हैं । ऐसी फसल में विश्वशक्ति अर्थात पंचमहाभूत, पर्यावरण, उत्तर-दक्षिण ध्रुव जमीन के जीवाणु उत्पादन में अत्यन्त सहायक हैं। ऐसी फसलों में पौधे की जड तक हवा की आवश्यकता होती है जिसे केचुवे आदि जन्तु पूरी करके उत्पादन बढाते हैं । ये जमीन में तीन फुट नीचे तक रहते हैं, जो किसान के मित्र रुप में कार्य करते हैं । ये वर्षा में ऊपर आकर पुन: नीचे चले जाते हैं । ये मिट्टी खाकर मिट्टी ही फेंकते हैं जिसमें तांबे का अंश होता है । ये मरकर भी फसल में ताम्बे का अंश छोड जाते हैं । ऐसी फसल का फायदा लेना चाहिये ।

यदि किसान पैसेवाला हो, तो वह गोबर, गोमूत्र केचुयें से सहायता लेता है । केचुयें खरीदने नहीं पडते, बल्कि जानवरों को पानी पिलाने के लिये जमीन में एक पोखर या गहरा गड्ढा बनाकर पानी भर देते हैं । उसी में केचुयें रहते हैं । वर्षा काल में गड्ढा खाली कर एक डेढ फिट मिट्टी तल में से लेकर खेत में डालने से सारे खेत में केचुवे हो जाते हैं, यह काम स्वयं पर अवलम्बित है ।

सेन्द्रिय खेती :-

जिस खाद में जीव जन्तुओं की चेतना रहती है, उसे सेन्द्रिय खाद कहते हैं। इसके विपरीत निरिन्द्रिय खाद होता है । ऐसे पदार्थ जिससे इनकी वृद्धि हो उनमें गोबर, गोबर की मिट्टी कम्पोष्ट खाद, हरा खाद, गड्ढे में तैयार किया खाद, गोमूत्र-पत्ते, भूसा आदि से तैयार किया गया खाद आदि हैं । ऐसे खाद से उत्पादन अधिक होता है, यह ऋषि मुनियों की पद्धति है ।

यदि रोग के कीडे पैदा हो गये, तो उन्हें नष्ट करने के लिये कीटनाशक दवाओं का छिडकांव न करके कीटभक्षक पक्षियों को बुलाने की विधि अपनानी चाहिये । चावल पकाकर पक्षियों को खिलायें, एक बार खाने के बाद वे बार बार आयेंगे और कीडों को

खाते रहेंगे । सूरज मुखी बाजरा जवार पर जब दाने आने लगतें है, तो कीडे भी आते हैं । परन्तु पक्षियों का आव्हान करने पर बगुले, चिडियाँ, कौवे आयेंगे और कीडों को खाकर खेती की रक्षा करेंगें, यही सेन्द्रिय कृषि है।

रासायनिक खेती :-

रासायनिक खाद जैसे नत्र, स्फुरद, पलाश आदि के डालने से यद्यपि पैदावर अधिक होती है, परन्तु जमीन के जीव नष्ट हो जाते हैं, जमीन निर्जीव हो जाती है, ऐसी जमीन क्षारयुक्त हो जाती है, उसमें पानी खडा रहता है, नीचे नहीं जाता । ऐसी जमीन को सुधारने का काम जैव खाद करती है । कृषि पराशर क्या कहते है ? **'जन्तूनां जीवितं कृषि:।'** किसान को जमीन में जैव खाद के साथ सूर्य का प्रकाश जो फसल को तैयार करने का साधन है, इसकी व्यवस्था करनी है, बाकी हरित द्रव्य जैसे क्लोरोफील आदि के झंझट में बिल्कुल नहीं पडना चाहिये। गोमुत्र, गोबर, गोदुग्ध, दही, घी ही अमृत हैं और सर्वश्रेष्ठ हैं ।

कृषि कैसे करनी चाहिये ?

मैं एक बार अपने मित्र श्री बसन्तराव गायकवाड के पास गया । उनके पास कुल चार एकड जमीन और १२ मनुष्य काम पर लगे थे । खेती देखकर मैं दंग रह गया । मेरे पास ७५ एकड जमीन और काम करनेवाले ८ मनुष्य । उनकी लाल मिर्च देखकर मैंने कहा- 'मिर्च मैं भी लगाऊंगा।' वसन्तराव बोले- 'लगाओ, पर जमीन तैय्यार करो, हल दो बार, बखर चार बार, खेत बिल्कुल नरम करके पानी छोडकर एक-एक फिट की दूरी पर लगाना चाहिए।'

इसके बाद मैं पंचायत समिति के कृषि प्रशिक्षण केन्द्र नांदेड में गया। वहां मुझे बहुत ज्ञान मिला, जो इस प्रकार है - अलसी, सरसों, मिर्च पौधे, बैंगन बीज, प्याज आदि जमीन में तीन ईंच नीचे बोया जाता है। इस से पहले हम ६ ईंच नीचे बोते थे, जो कभी उगता था तो कभी नहीं । इसके विपरीत चना, मक्का, ज्वार, बाजरा, धान आदि गहरा बोना चाहिए।

बीज अच्छा कैसे बनायें ?

बीज के लिये स्वस्थ सुन्दर पूरे पके हुये पौधों पर लाल कपडा आदि का चिन्ह लगाकर उस बीज का प्रयोग करना चाहिये । तथा बीज को सुरक्षित रखने के लिये उसे अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष में बर्तनों में रखेंगें, तो उसमें कीडे नहीं लगेंगे ।

* * *

खेती के लिए जैविक खाद निर्माण

१) **खाद :-** गोमूत्र १५ लिटर, गाय का गोबर १५ किलो, पानी १५ लिटर, गुड पाच किलो यह मिश्रण मिट्टी के पात्र में पांच दिन ढक्कन लगाकर रखना । पाँच दिन के बाद मिश्रण निकालकर १०० लिटर पानी में अच्छा मिश्रण करके एक एकड जमीन में सभी तरफ अच्छी तरह से डाल देना । यह मिश्रण बोनेसे पहले डालना चाहिए । इस प्रयोग से उत्पादन बढता है ।

२) **खाद का दूसरा तरीका :-** गोबर १० किलो, गोमुत्र ५ किलो, गेहुं का आटा २५० ग्राम, गुड २५० ग्राम, पानी १५ लिटर, यह मिट्टी के बर्तन में (घडा, रांजन, टाकी, डेरा) ऐसा बडा मिट्टी का होना चाहिए । उसमें डालकर मिश्रण करके ७ दिन ढक्कन लगाकर रखके आठवे दिनमें निकालकर १ लिटर मिश्रण को ३० लिटर पानी में लकडीसे मिलाकर-हिलाकर अच्छी तरहसे छिडकना ।

१) एक छोटे वृक्ष के तल में २५० ग्राम मिश्रण डालना है ।

२) बडे याने एक साल, दो साल के आधा लिटर मिश्रण डालना है ।

यह मिश्रण छह मास के बाद एक बार डालना है ।

३) **खाद के लिए गड्ढा :-** ३ फीट चौडा और ६ फीट लंबाई और गहराई ३ फुट, खाद ज्यादा बनानी हो, तो ३ फीट चौडा और लंबाई कितनी भी चलेगी, गड्ढा, बंधा हुआ भी चलता है । गड्ढे में खाद के लिए प्रथम गड्ढे के अंदर मिट्टी की ३ इंच दोबारा डालकर उपर का तैयार किया हुआ खाद उस मिट्टी के उपर फैलाना है, मिट्टी गीली होनी चाहिए । फिर उस मिट्टी पर मिट्टी फैलाकर उपर से घास-पत्ते, भूसा, कुडा-करकट, कचरा फैलाना है । रोज का सफाई कचरा या गोबर आदि चलेगा। गड्ढा भरने के मध्य में आखरी भी वह तयार किया हुआ खाद खेतों में डालें । तीन मास में खाद तैयार होता है । बाद में एक महिने में भी खाद तयार हो जायेगा ।

१) गोबर ५ किलो, २५ किलो पानी डालकर उसमें गोमुत्र १ लिटर डालना है, लकडी से सुबह-शाम हिलाना है । १० दिन में खाद तैयार होता है ।

२) १ लिटर छांछ को सात दिन रखकर सडाना, ५०० लिटर या १००० लिटर पानी मिलाकर मिश्रण करके पाव एकड जमीन में डालना है ।

३) **कीटनाशक औषधियुक्त खाद :-** स्प्रे या फवारनी के लिए वृद्ध गाय, बैल इनके मूत्र में नाईट्रोजन बहुत होता है । इस १० किलो मूत्र में कडवे नीम के छाल का ३ किलो

चूर्ण १५ दिन सडाना है, इसको भी रोज दो समय हिलाना है । इस औषधी खाद को छानकर लेना है। इस खाद और कीटनाशक औषधी में १०० लिटर पानी डालकर मिश्रण करके रोग पडा हुआ वृक्ष आदि पर छिडकना या फवारना है । यह औषधी खाद के रुप में और कीटनाशक के रुप में भी प्रयुक्त किया जा सकता।

४) **औषधि फवारनी के लिए :-** गोमुत्र में मिरगुड - निरगुंडी को कूटकर बडे पतेले में या कढाई में डालकर, गोमूत्र पूरा भरकर रहना, यह मिश्रण २० दिन रखना है । इसे दो समय हिलाना है।बाद में छानकर फवारनी करनी है।इससे कीट, भूंगे आदि मरते हैं।

५) **औषधि फवारनी के लिए :-** एक किलो तुलसी पंचांग, एक किलो नीम के पत्ते कूटकर, पाच किलो गोमुत्र तांबे के पात्र में रखना, मिश्रण करके १३ दिन ढककर रखना है । फिर उस हंडे को, पतेले को अग्नि से पकाओ। आधा होने के बाद छानकर लेना है । ५० ग्राम औषध १० लिटर में डालकर फवारनी करनी है, अति उत्तम है ।

६) **फवारनी के लिए औषधि :-** हरि मिर्च + लहशून इन दोनों के मिश्रण का १/२ काढा बनाना है । इसे छानकर इस अर्क को १०० गुना पानी डालकर उसमें गोमूत्र १० लिटर डालना है, इस मिश्रण को छानकर स्प्रे या फवारनी करना है ।

७) नीम की निमोली १० किलो कूटकर, १० लिटर गोमूत्र, १० लिटर छाछ मिलाना है । २० गुना पानी मिलाकर छानकर फवारने से कीट मरते हैं ।

८) तमाकू ५०० ग्राम ३ लिटर पानी में डालकर, पतेलें में डालकर उसको अग्नि देकर आधा होने के बाद, छान कर, उसमें गोमुत्र डालकर फवारनी करनी है । ये सभी औषधियों का किसी भी फसल या फल फूल के उपर प्रयोग कर सकते हैं, नुकसानदायक नहीं है।

सूचना :- इन सभी औषधी वनस्पतियों से भी औषधी बनाकर उपयोग में ला सकते हैं । टमाटर का क्षुप-पंचाग, देवदार, सागर गोटा-गजगा, टाकळी, पिंगळी वल्ली, सूखा-शरपुंखा, ज्येष्ठ मध, बच(व्यखंड), हिंगनबेट की छाल, डिकेमाली, हिंग, कनेरी, तुलसी, नीम, हरी मिर्च, काली मिर्च, लहशून, तमाकू, छाछ, गूगल, सरसों, वायविडंग, अडुलसा, त्रिफला, नागरमोथा, इन्द्रजव, गिलोय, सुदर्शन, चिरायता, बांझ कर्टुल, कडवी तोरई, कडवा कदू, करंज बीज, चुना, द्विदल दाल, आटा, हल्दी, औदुंबर, खैर, गोमुत्र, गाय का गोबर, केवडा, मंदारपत्र (जिसके ऊपर रोग नही आता, उसके पत्ते), फूल या बीज लेकर फवार सकते हैं ।

* * *

आधुनिक काल में वैदिक कृषि की उपयुक्तता

प्राचीन समय में वैदिक रीति से कृषि की जाती थी । कृषि कार्यो में अमावस्या तथा पूर्णिमा (शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष) का अत्यधिक महत्व है । इस दृष्टि से कृषिकार्य के लिये इस लेख में विचारों का मंथन हो रहा है । मानव समाज के लिए आहार आवश्यक है । अपनी आवश्यकतानुसार समाज को अपने अन्न की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए । इस सृष्टि में प्रथमत: पांच महाभूतों का निर्माण हुआ है ।

१) **पृथ्वी :-** पृथ्वी से अन्न, फल, कंद, सब्जी इत्यादी का उत्पादन करना ही कृषि है । कृषि वद्या की निपुणता के कारण मनुष्य अपने लिए अन्न निरोगी, उत्तम गुणयुक्त, अधिक तथा इच्छानुकुल अन्न प्राप्त कर सकता है । कृषि का स्थान भूमि है । भूमि पर ही कृषि करने से अन्न की समस्या हल हो सकती है । वेद में कहा है - **'सुसस्या: कृषिस्कृधि।'** अन्न ही प्राणियों का जीवन है । अत: अन्न के लिए खेती करनी चाहिए।

२) **आप :-** आप अर्थात् पानी। इसके गुणधर्म तृप्ति व शीतलता हैं । पानी जीवन है।

३) **आकाश :-** आकाश का गुणधर्म अवकाश (रिक्त स्थान)

४) **वायु :-** शुद्ध पर्यावरण के लिए पंच महाभूत शुद्ध होने चाहिए, लेकिन सर्वप्रथम वायु शुद्धि अन्न-धान्य और वनस्पती शुद्ध निरोगी उगते और रहते नही, तो वायु शुद्धि के लिए वृक्ष लगाना होगा और यज्ञ से पर्यावरण सुधारना होगा ।

५) **तेज :-** इसमें सूर्य चंद्र, अग्नि, विद्युत् ये सब आते हैं ।

६) **सूर्य :-** सूर्यकिरणों से ही हम ऊर्जा, विद्युत्, प्रकाश, उष्णता प्राप्त कर सकते हैं।

ब) **चंद्र :-** चन्द्र का प्रकाश आह्लाददायक वनस्पतियों के लिए बलकारी है । एक पौराणिक कथा है - लंकाधिपति रावण के यहां सूर्य हवा करता था और चन्द्र पानी भरता था, ये कितना सत्य है? देखो, सूरज की किरणों से अब ऊर्जा (विद्युत) तैयार हो रही हैं, इस में सन्देह नहीं, यह सत्य ठुकरा नही सकते ।

चन्द्र पानी कैसे भरता था ? यह भी सत्य ठुकरा नहीं सकते । उस समय उच्चस्तरीय वैज्ञानिक सभी विद्याओं में पारंगत थे । जब सुषेण नामक वैद्य लक्ष्मण को मूर्च्छित अवस्था में वनस्पति का रस पिलाकर होश में ला सकता है, तो उस समय चन्द्रमा से पानी क्यों नही प्राप्त हो सकता ? चन्द्रमा के गुणधर्म का उपयोग जितना भी लिया जाय, वह कम है । अमावस्या के बाद चन्द्रमा प्रतिपल बढता है तथा उसका प्रकाश भी बढता

जाता है । पूर्णिमा को तो पूर्ण प्रकाशित होता है । उसी प्रकाश का परिणाम प्रकृति के जीव जन्तुओं पर पडता है । सुश्रुत में कहा है –

रसोहनं शीतलं हलंदिज्वरदाहविषापहम् ।

चन्द्रकान्तोद्भवं वारिपितघनं विमलं स्मृतम् ।।

अर्थात् शास्त्रज्ञों ने बनाया हुआ चन्द्रकान्त मणि चन्द्रमा के प्रकाश में उसका उपयोग करने से हलकी – हलकी बारिश होती है, वह पानी बहुत ही उपयुक्त है । वह पानी शीतल, स्वच्छ, आनन्ददायक, पित्तज्वरदाहक, विषनाशक है। यह मणि अकबर के दरबार में था । इसकी जानकारी 'आइने अकबरी' में है । इस प्रकार के मणि इससे पूर्व शास्त्रज्ञों से प्राप्त हुई थी । वाल्मिकी रामायण में प्रभू रामचन्द्रजी लक्ष्मण को कहते है–

ऱ्हस्वी रुक्षी प्रशस्तश्च परिवेषस्तु लोहितः ।

आदित्ये विमले निलक्ष्म लक्ष्मण दृश्यते ।। (युद्ध काण्ड २३/६)

यहां प्रभु रामचन्द्र सूर्य की ओर दुरबीन लगाकर देखते हुए लक्ष्मण को कहते हैं– 'हे लक्ष्मण! सूर्य पर एक काला सा दाग दिखाई दे रहा है।' इस वर्णन से पता चलता है कि उस समय का विज्ञान कितना प्रगतशील था । इसी प्रकार रावण का पुत्र मेघनाद आकाश में बादलों की आड से लडाई करता था ।

कृषि के प्रयोग :– खेत में जो अनावश्यक घास इत्यादी हैं, वह नष्ट करने के लिए "प्रथम पूर्णिमा होने पर हल आडा सीधा चलाएँ और तुरंत आडा वखर चलाएँ, ऐसा हर पूर्णिमा के बाद ३–४ बार करने से उस जमीन में से घास नष्ट हो जाती है । बाद में उसे खेत से चुनकर अलग कर दें । यह मशागत अमाबस्या तक ही करे ।" अमावस्या के बाद न करें । क्योंकि यदि अमावस्या के बाद हम खेत में हल या वखर चलाएंगें, तो वह घास फिर से पैदा हो जाएगी । 'कारण उसकी माँ पृथ्वी और पिता चन्द्र है । परन्तु इस काल में चन्द्र पूर्णता की ओर प्रगतिशील रहता है, जिसका कारण अमावस्या से पूर्णिमा चन्द्र के प्रकाश का गुण प्रभावी तथा परिणामकारक होता है । इस काल का जो प्रकाश है, उससे जमीन में गीलापन बढता जाता है । पूर्णिमा से अमावस्या तक जमीन को मशागत और अमावस्या से पूर्णिमा तक बुवाई करनी चाहिए ।' यह सब प्रयोग के अंत मे सिद्ध हो गया है ।

प्राचीन काल से चली आ रही भारतीय परंपराओं में निम्न प्रकार के साडे तीन मुहूर्त

माने जाते हैं -

१) चैत्र शुद्ध प्रतिपदा (गुढी पाडवा) २) कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा (दीपावली पाडवा)

३) अश्विन शुद्ध दशमी (दशहरा) ४) वैशाख शुद्ध तृतीया (अक्षय तृतीया)

ये सभी मुहूर्त शुक्ल पक्ष में ही हैं। पहले के शास्त्रज्ञ तथा ऋषि-मुनियों ने निश्चित किया है। इसलिए इसी काल में खेतो के महत्त्वपूर्ण कार्य कर लेने चाहिए।

यदि अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष में किसानों ने बोना चाहा, तो वह जमेगा या नही ? जमीन की मशागत किसान के हाथ में है, परन्तु वर्षा समय पर होगी या नहीं ? ये तो किसानों के हाथ में नही है , उस समय क्या करें ? यह प्रश्न उपस्थित होता है। वर्षा होने पर बुवाई में संकरित बीज सबसे पहले और समय पर बोने चाहिए, तभी अच्छी फसल आती है। इस संकरित बीज को अब बोएं या अमावस्या पास आने पर बोएँ ! ऐसा कहके नही चलेगा। यदि ऐसे बोएंगे, तो फसल अच्छी नही आएगी, परन्तु रोग जरुर पडेगा। यदि वर्षा अमावस्या होने पर होती है, तो हमें पहले से अच्छी फसल आएगी, यह आपको निश्चित ही दिखाई देगा। इस संदर्भ में नीचे दी गई कुछ प्रत्यक्ष घटित घटनाएँ प्रमाण स्वरुप दे रहे हैं।

१) परली के वयोवृद्ध दिवंगत आर्य कार्यकर्त्ता स्व.श्री.दौलतरावजी गिरवलकर ने इ.स.१९९०-९१ में अपनी सूखी जमीन १ एकड ५ किलो जमीन में लगभग २७ क्विंटल हायब्रीड(काली ज्वार) का उत्पादन लिया। इस पर उनसे पूछने पर उन्होंने बताया कि मैने अपने आयुष्य में इतना उत्पादन कभी नहीं लिया।

२) मेरे जीवन का भी ऐसा ही अनुभव है। सन १९६१-६२ में मैंने अपनी सूखी जमीन में एक थैली में लगभग ३० क्विंटल हायब्रीड (काली ज्वार) का उत्पादन लिया। मैने और गिरवलकरजी ने शुक्ल पक्ष के समय ही बुवाई की थी।

३) श्री बीराप्पा रामा दुधभाते, जो कि ग्रा.औराद तह.उमरगा जि.उस्मानाबाद के मेहनती किसान हैं। उन्होंने लोगों की खेती बंटाई से की थी। सन् १९८९-९० में पूर्णिमा होने पर वर्षा हुई। उन्होंने अरहर की बुवाई की और पंद्रह दिन में बंटाईवाली जमीन की। बुवाई पूरी की, परंन्तु उनकी स्वयं की जमीन की बुवाई अमावस्या होने के बाद शुक्ल पक्ष में की। २ एकड सूखी जमीन में बोई हुई अरहर को न खाद डाला और न ही किसी प्रकार की दवाई का छिडकाव किया, तो उस पर रोग नहीं था। उस २ एकड में १२

क्विंटल अरहर का उत्पादन मिला और कृष्ण पक्ष में अरहर अच्छी नहीं आती, ये पता चला । ऐसा होने पर भी लेखक ने लोगों की तरह ही बुवाई की परन्तु उसमें उस फसल का एक दाना भी नहीं मिला । इतना ही नहीं उस वर्ष पूरे मराठवाडा में अरहर बहुत ही हरी-भरी थी, परन्तु उसमें फूल तथा फली बिलकुल नही लगी थी ।

४) सन् १९९०-९१ में भी वर्षा पूर्णिमा के बाद ही हुई । किसानों ने दुबारा अरहर बोया उस साल भी अरहर हरी थी, परन्तु फूल बहुत ही कम लगे उस साल अरहर का उत्पादन ही नही हुआ ।

५) सन् १९९१-९२ में भी वर्षा पूर्णिमा के तीसरे दिन बाद हुई । किसानों ने अरहर की बुवाई की । उसके बाद फूल तो लगे परन्तु रोग पडने लगा और उत्पादन कुछ भी नही हुआ ।

६) सन् १९९३ में वर्षा पूर्णिमा के ६ दिन बाद हुई । इस साल भी अरहर पर रोग पडने से दो आना फसल हुई। सन १९९४ में वर्षा पूर्णिमा के ८ दिन बाद हुई । उससे अरहर को फूल और फल्ली लगी । दवाइयों का छिडकाव करने से भी चार आना फसल हुई । उमरगा तहसील में वर्षा न होने से बुवाई हुई नहीं ।

७) सन् १९९४-९५ में वर्षा अमावस्या के बाद थोडी हुई फिर भी फसल अच्छी आई और रोग भी लगा तो बहुत कम प्रमाण में था ।

हमारे भारत देश में मुहूर्त मानने के कई कारण हैं । उत्पादन की दृष्टि से समय काल, भावना, योग्य, अयोग्य, अच्छा, बुरा इसीलिए मानते हैं और यह भावना आज तक दृढ है । यह बात बहुत ही महत्व की है, ऐसा समझना चाहिए। कुछ उदाहरण यहाँ इस बारे में प्रमाण स्वरुप है -

* लकडियाँ जब काटते हैं, तो किसान उसे अमावस्या के बाद ही काटते हैं । पूर्णिमा के बाद काटी हुई लकडी में घुन(दीमक) लग जाती है ।

* स्त्रियाँ धान्य रखने के लिए बांस की लकडियों की टंकी जो बनाती हैं, उसमें लेपन अमावस्या के बाद ही करती हैं । पूर्णिमा के बाद यदि लिपते हैं, तो अनाज में कीडे पैदा हो जाते हैं ।

* देहातों में उपलों के ऊपर पूर्णिमा के बाद गोबर नहीं लगाते। ऐसा करेंगें, तो उसमें कीडे लगकर उपलों को भूसा बनाते है ।

* किसानों को मैं यह कहता रहता हूँ कि बुवाई--कढाई इत्यादि काम अमावस्या हो जाने पर ही करें । कुछ लोग तो इसी प्रकार अपने काम करते हैं । इससे उनके उत्पादन में वृद्धि हुई और अनाज को कीडा नहीं लगा । अत: नये सभी काम शुक्ल पक्ष में करें।

* अश्विन मास में अमावस्या के बाद में प्रतिपदा को नवरात्र में घटस्थापना होती है । इस बारे में कुछ लोगों को विशेष करके आधुनिक विज्ञानवादियों को अंधविश्वास और पागलपन नजर आता है। लेकिन यह योग्य नहीं, उसमें शास्त्रशुद्धता है । अपनी ही जमीन की मिट्टी को लेकर आएँ और उसमें चार उंगलियों का पट्टा ज्वार, गेहूँ इत्यादी डालें । छोटे मिट्टी के घड में पानी भरके उस पर रखे और उसमें खाने के पान रखें । उस पान के पत्ते से क्लोरोफिन (हरित द्रव्य) प्राप्त होता है । बाद में छोटा सा दिया जलाया जाता है । उस नौ दिनों में जो धान व पौधे अच्छे आते हैं, वो ही बीज लगाने होते हैं । यही इसके पीछे का शुद्ध हेतु है ।

* गन्ना या ज्वार पूर्णिमा के उपरान्त लगाने पर उसमें 'कानी' (काला रोग) हो जाता है । ये बात हमने प्रत्यक्ष अनुभव की है तथा इसपर हमने निरीक्षण किया है ।

* परली गांव के सभी माली लोग पूर्णिमा से अमावस्या तक जमीन की मशागत करते हैं और अमावस्या के बाद बीज बुवाई करते है अथवा साग सब्जी लगाते है । उससे परली के लोगों को निरोग और स्वास्थ्य रक्षा में पूरक ऐसी साग सब्जी कम कीमत में मिलती है ।

* कुछ वैद्यों और चिकित्सकों का यह मत है कि स्त्रियों की गर्भधारणा अमावस्या के बाद होती है, तो होनेवाली संतान गोरी, सशक्त बलशाही, बुद्धिमान होती है, परन्तु इससे विपरीत पूर्णिमा के बाद की हुई गर्भधारणा से प्राप्त संतान काली सांवली होती है और वो बलवान नहीं होती ।

* औराद (तह.उमरगा जि.उस्मानाबाद) के प्रतिष्ठित किसान वसंतराव गायकवाड तथा भानुदासराव गायकवाड इन दोनों ने पूर्णिमा होने के बाद बैंगन के पौधे लगाये । उस समय मैंनें उन्हें बैंगन में रोग लगने के संकेत दिये थे, वैसा ही हुआ । बैंगन खूब लगे, परन्तु उस पर रोग पडा हुआ था। दवाईयों का छिडकाव करने पर भी लाभ नही हुआ । उसी कारण से उन्होंने बैंगन के पौधों को निकाल दिया ।

* सन् १९७३ में हम तीन भाईयों में खेती का बँटवारा हुआ । उस समय की एक घटना है। छोटे भाई की जमीन में मशागत तथा बुवाई कर दी । कुछ दिनों में पूर्णिमा आई

इसलिए बुवाई ही बंद की । तब मेरे भाई बोले की, 'मुझे ऐसे मुहूर्त आदि कुछ नही देखना है । जो आएगा सो आएगा। इसलिए बुवाई करनी है।' ऐसा कहने पर पूर्णिमा के दो दिन बाद २५ किलो मुंगफली लगाई गई। मैने अपने खेत में तो अमाबस्या के बाद ही मुंगफली लगाई । उस समय बरसात नही थी, वह अल्प सी गीली जमीन में ही लगाई । कुछ दिनों बाद वर्षा हुई । बाद में हम दोनों भाईयों की मुंगफली ८-८ बोरी हुई । पर मेरे मन में एक ही चिंता सता रही थी कि, दोनों का उत्पादन समान कैसे? तब मैंने दोनों की मुंगफली लेकर देखी और फोडकर देखी, तब मुझे पता चला कि जो मुंगफली पूर्णिमा के बाद लगाई उस फली में जो दाना था, वह छोटा, चपटा बेकार सा लगा और अमावस्या के बाद लगाई हुई मेरी मुंगफली का दाना आकार से मोटा, वजनदार और स्वादिष्ट था ।

* सन् १९८२ में श्रीपती संभाजी दुधभाते इन्होंने शुक्ल पक्ष में बोया हुआ एक एकड में २३ क्विंटल गेहूँ प्राप्त किया । श्री शंकरराव एकनाथराव गायकवाड ने शुक्ल पक्ष में ही बोकर प्रति एकड २१ $^{१}/_{२}$ क्विंटल गेंहू प्राप्त किया । श्री विनायक मारुती जाधव ने भी एक एकर में २४ क्विंटल गेहू का उत्पादन लिया । ये सभी घटनायें मेरे गांव औराद ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद महाराष्ट्र की हैं ।

* सन् १९९४ में श्री बसवराज रामचंद्र बाबशेट्टे 'खंजुरी' तह.आलंद जि.गुलबर्गा (कर्नाटक) ने एक एकर मे साढे बारह क्विंटल सूरजमुखी का उत्पादन लिया । मैने उन्हें शुक्ल पक्ष में ही बोने के लिए कहा था । उसका परिणाम अच्छा ही निकला ।

*** अनाज का उत्पादन लेने के लिए जमीन की मशागत कैसे करे ?**

इस बारे में संत तिरुवल्लुट कहते हैं कि जमीन में इतनी मेहनत करें कि १ किलो गिली मिट्टी का वजन केवल २५० ग्राम ही जाये । वह जमीन सूखने के बाद उसमें हल तथा वखर चलाकर खाद इत्यादी डालकर उस जमीन को मुलायम बनाएँ । ऐसी जमीन में पशुओं को बांधने से उनके द्वारा किये मल तथा मुत्र से वह जमीन हलकी हो जाती है । इसका अनुभव हमें मिला है।

फसल पर रोग न पडे, इसलिए खरिप हंगाम में जमीन की बुवाई 'पूर्व-पश्चिम' दिशा में की जाती है । रबी में 'दक्षिण-उत्तर' दिशा में बोया जाता है । इससे जमीन पर प्रकाश अधिक फैलकर जन्तु नष्ट हो जाते हैं । खरिप के समय सूर्य पूर्व की ओर होता है और रबी के समय दक्षिण से उत्तरायण की ओर होता है ।

जिस प्रकार सूर्यप्रकाश की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार चंद्रप्रकाश की भी आवश्यकता होती है । जिस प्रकार वैद्य लोग प्रवाल भस्म और चन्द्रप्रभावटी नामक औषधी को चन्द्र की भावनाएँ देकर तैयार करते हैं । वह औषधी यदि उष्णता, पित्त और ज्वर रोगियों को दी जाए, तो वह रोग तुरंत ठीक हो जाता है । इसीलिए चंद्र के प्रकाश से जमीन की मशागत करके लंबी लाईन या क्यारियाँ बनाएं, जिससे उसमें चंद्र का प्रकाश अच्छी तरह पडे । उससे जमीन ठंडी रहती है और फसल भी दमदार होती है । चंद्र और सूर्य के प्रकाश के साथ ही जमीन और फसल के लिए शुद्ध हवा की आवश्यकता होती है, उसी के साथ ही पानी की भी आवश्यकता पडती है ।

आजकल खेती में केंचुएँ के खाद का निर्माण करके भी कईं किसान उत्पादन ले रहे हैं । इन केंचुओं का मुख्य कार्य फसल की जड को हवा की प्राप्ति कराना है । दूसरी बात ये केंचुएं खुद उसमें मरके उस फसल को ताम्र द्रव्य की प्राप्ति कराते हैं । केंचुऐं जमीन को हलका बनाते हैं । अर्थात् आकाश नामक तत्व के निर्माण कार्य करते है । सूखे पत्ते, फसल का अनावश्यक भाग, गोबर आदि से निर्मित खाद कंपोष्ट खेती के लिये बहुत ही उपयुक्त होता है । इससे किसी भी प्रकार के रोगाणु पैदा नहीं होते । इस प्रकार से खेती में तीन साल तक अच्छी फसल ले सकते हैं। जमीन के ऊपर के कीट मारने के लिए क्षार निर्माण करने हेतु सुखे पत्ते, अनावश्यक फसल का भाग, गन्ने के सुखे पत्ते, पेडों की डालियाँ आदि लेकर जमीन पर फैला दें और जलाएँ । इसी प्रक्रिया को जमीन को भुनना अथवा अन्न घटक क्षार निर्माण करना कहा जाता है ।

हरित खाद :– जमीन में खाद डालने पर जमीन की मशागत होती है । जमीन में पहली बार हल चलाकर लाईनें बना लेते हैं, उसमें 'सलम', छोटा सूर्यमुखी, बर्सल उडद, मूंग, हरित धान्य लाईन में डालकर ऊपर से मिट्टी में ढँक देते हैं । वह सड जाता है, जिससे खाद का निर्माण होकर जमीन फिर से सुधरती है।

यजुर्वेद की मंत्रसंख्या १७/२ तथा १८/७ के अनुसार जमीन की मरम्मत के लिए हल और वखर चलाना चाहिए । उसी के साथ दूध, घी, शहद, डालकर दुबारा हल चलाना चाहिए । अधिक उत्पादन के लिए अधिक मेहनत करनी चाहिए, ऐसा वर्णन है । इससे जमीन में से उत्पन्न अन्न उत्तम औषधी गुणों से युक्त होकर निरोगी बनने में सहाय्यक होगा । आजकल रासायनिक खाद से निर्मित अन्न योग्य नहीं, ऐसा कृषि शास्त्रज्ञों का कहना है ।

*** बाजार से लायी गयी सब्जी दूसरे दिन सड जाती है । ऐसा क्यों ?**

ऐसा केवल रासायनिक खाद के कारण ही है । इसलिए ऐसी फल-सब्जियों से दूर रहे, जिससे आरोग्य सुरक्षित रह सके ।

आचार्य चाणक्य ने वेदशास्त्रों का अध्ययन करके उत्तम कृषि के लिए बीजों को कैसे संस्कारित किया जाता है, इस बारे में बहुत ही अच्छे वचन कहे हैं ।

एक घडे में आधा पानी लें । उसमें सोने की अंगुठी लाल होने तक गरम करके डालें तथा आवश्यकतानुसार बीज डालकर ०४ घंटों तक गलाएँ । उस घडे को लकडी की पट्टी पर रखे । बाद में बीज को बोयें, इससे बीजों पर सोने के संस्कार होते हैं । आयुर्वेद में कहा है - 'शरीर पर सोने के आभूषण डालने से अथवा स्वर्ण भस्म खाने से रोग नष्ट होकर निरोगी काया बनती है ।'

हम अपने दैनंदिन व्यवहार में फलों को विविध नाम देते हैं । विविध प्रजातियों से उनके नाम व स्वाद में अंतर होने के कारण उसके विभिन्न नाम पडते हैं । आज भी हम आम तथा अन्य बीजों अथवा पौधों को अनेकप्रकार से संस्कारित करते हैं ।

आम के कुछ नाम इस तरह से हैं - आम, शक्कर आम, शेपू आम, घी आम, सौंप आम, अजवयन आम, खिरा, काकडी जैसा अर्थात जो खट्टा नही सो- वाळक्या आम, अमरुद को-दुध्या अमरुद (पेरु) कहते है । तो ऐसे बीज बोते समय उगाते समय बीज को ही उस उसके गुणों से संस्कारित करते है । किसानों के मन में थोडा बहुत सन्देह होता है कि, वर्षा कब होगी ? हुई तो अच्छी तरह होगी या नहीं ? जमीन में गीलापन रहेगा या नहीं ? ऐसा होने पर भी किसान बुवाई करें और लाभ लें । अमावस्या की राह देखते रहे, तो सब कुछ हाथ से निकल जाऐगा, ऐसा महसूस होने पर नि:सन्देह बुवाई करें। इसमें संकरित ज्वार जरुर बोएँ, परन्तु सूरजमुखी, उडद, चावल (धान) आदि अमावस्या के बाद ही बोएँ । दीपावली के बाद की बुवाई से पहले चना, गेहूँ, सुरजमुखी आदि फसल अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष में ही बोएँ । विशेषत: रबी की ज्वार बोनी हो, तो शुक्ल पक्ष में ही बोएँ । हमारे किसान भाई हस्त नक्षत्र की राह देखते हैं । वह नक्षत्र पूर्णिमा के बाद भी आ सकता है । फिर भी शुक्ल पक्ष में ही बोने पर उत्पादन अधिक मिलता है । अमावस्या तक गीलापन नहीं रहेगा। ऐसा लगने पर सुखी जमीन में अमावस्या की राह न देखें। बुवाई का काम अवश्य करें। जितना हो सके उत्पादन का अधिक लाभ लेवें। किस प्रकार लाभ लेवें। ***

॥ ओ३म् ॥

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्यसमाज परली वैजनाथ जि.बीड

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान-२०१६

(श्रावणी उपाकर्म पर्व- वेद प्रचार माह)

दि. ३ अगस्त से ३१ अगस्त २०१६

राज्यस्तरीय कार्यक्रम

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.ब्रिजेशजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) एवं पं.सुखपालजी आर्य (भजनोपदेशक)	आर्य समाज, धर्माबाद	३ से ७ अगस्त २०१६
पं.ब्रिजेशजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) गाजियाबाद - उ.प्र. एवं पं.सोगाजी घुन्नर (भजनोपदेशक) हदगांव	आर्य समाज, हदगांव आर्य समाज, परली-वैजनाथ आर्य समाज, किल्ले धारूर आर्य समाज, गान्धी चौक, लातूर आर्य समाज, कुमारनगर धुलियां (धुळे)	८ से ११ अगस्त २०१६ १२ से १५ अगस्त २०१६ १६ से १९ अगस्त २०१६ २० से २४ अगस्त २०१६ २५ से ३० अगस्त २०१६
पं.सुखपालजी आर्य (विद्वान व भजनोपदेशक) सहारनपुर-उ.प्र. एवं पं.आर्यमुनिजी (भजनोपदेशक) हदगांव	आर्य समाज, देगलुर आर्य समाज, उदगीर आर्य समाज, रामनगर, लातूर आर्य समाज, औराद शहाजानी आर्य समाज, निलंगा आर्य समाज, सोलापूर	८ से १२ अगस्त २०१६ १३ से १५ अगस्त २०१६ १६ से १९ अगस्त २०१६ २० से २२ अगस्त २०१६ २३ से २५ अगस्त २०१६ २७ से ३० अगस्त २०१६
प्रा. ओमप्रकाशजी विद्यालंकार-होलीकर (वैदिक विद्वान), लातूर पं.हेमंतजी शास्त्री (आर्य भजनोपदेशक) पुणे	आर्य समाज, वारजे-मालवाडी, पुणे आर्य समाज, नानापेठ, पुणे आर्य समाज, पिंपरी, पुणे	१३,१४,१५ अगस्त २०१६ १६, १७ अगस्त २०१६ १८ से २४ अगस्त २०१६

पं. सुधाकरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) पुणे एवं **पं.प्रतापसिंहजी चौहान** (आर्य भजनोपदेशक) उदगीर	आर्य समाज, अहमदनगर	३, ४, ५ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, देवलाली कम्प, नाशिक	६, ७ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, पंचवटी, नाशिक	८, ९, १० अगस्त २०१६
	आर्य समाज, वेदमंदिर, जलगांव	११, १२ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, मंजुषा कॉलनी, जलगांव	१३, १४ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, नशिराबाद, ता.जि.जलगांव	१५, १६ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, इदगांव, ता.जि.जलगांव	१७ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, भुसावल, ता.जि.जलगांव	१८, १९ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, सटाना नाका, मालेगांव	२०, २१ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, आष्टे, जि.नंदुरबार	२२ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, सरस्वती कालोनी,सम्भाजीनगर	२३,२४ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, गारखेडा,सम्भाजीनगर (औ.बाद)	२५,२६ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, सिडको,सम्भाजीनगर (औ.बाद)	२७,२८ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, बन्सीलालनगर,सम्भाजीनगर	२९ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, जालना	३०, ३१ अगस्त २०१६
पं. माधवराव देशपाण्डे (वैदिक विद्वान) **सौ.नलिनी मा.देशपाण्डे** (भजनगायिका) पुणे एवं **पं.कर्णसिंहजी आर्य** (आर्य भजनोपदेशक) माडज	आर्य समाज, उमरगा ता.उमरगा	३, ४, ५ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, औराद (गुं.) ता.उमरगा	६, ७, ८ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, गुंजोटी ता. उमरगा	९, १०, ११ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, माडज ता. उमरगा	१२, १३ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, धाराशिव (उस्मानाबाद)	१४, १५ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, तेरखेडा ता. जि.धाराशिव	१६ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, कळंब ता. उस्मानाबाद	१७, १८ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, वाशी ता. उस्मानाबाद	१९, २०, २१ अगस्त २०१६
पं.दयारामजी बसैये–बंधु एवं **पं.जोगेंद्रसिंहजी चौहान** (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, भगुर, जि. नाशिक	१३, १४, १५ अगस्त २०१६
पं. विश्वनाथजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) पिंपरी–पुणे एवं **पं.गणेशजी आर्य** (वैदिक विद्वान)वारजे मालवाडी–पुणे	आर्य समाज, ओम सोसायटी, पुणे	३ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, खडकी, पुणे	४ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, खडकवासला, पुणे	५ अगस्त २०१६
	आर्य समाज, मंचर, पुणे	६ अगस्त २०१६

पं.राजवीरजी शास्त्री, (वैदिक विद्वान) पं.अरूणकुमारजी सांगळे (आर्य भजनोपदेशक)सोलापूर	आर्य समाज, परभणी आर्य समाज, नांदेड आर्य समाज, मुदखेड आर्य समाज, रेणापुर	३ से ६ अगस्त २०१६ ७, ८ अगस्त २०१६ ९, १०, ११ अगस्त २०१६ १२ से १५ अगस्त २०१६
पं. श्रीरामजी आर्य (वैदिक विद्वान) लातूर एवं पं.सुभाषजी गायकवाड (आर्य भजनोपदेशक) सोलापूर	आर्य समाज, हिंगोली आर्य समाज, आखाडा बाळापूर आर्य समाज, घोडा ता.कळमनुरी आर्य समाज, जरोडा ता.कळमनुरी आर्य समाज, येहळेगांव ता.कळमनुरी आर्य समाज, मरडगा ता.हदगांव आर्य समाज, भाटेगांव ता.हदगांव आर्य समाज, शिऊर ता.हदगांव आर्य समाज, तळणी ता.हदगांव आर्य समाज, निवघा ता.हदगांव आर्य समाज, तामसा ता.हदगांव आर्य समाज, कंजारा ता.हदगांव	३, ४ अगस्त २०१६ ५, ६ अगस्त २०१६ ७, ८ अगस्त २०१६ ९, १० अगस्त २०१६ ११, १२ अगस्त २०१६ १३, १४ अगस्त २०१६ १५, १६ अगस्त २०१६ १७, १८ अगस्त २०१६ १९, २० अगस्त २०१६ २१, २२ अगस्त २०१६ २३, २४ अगस्त २०१६ २५, २६ अगस्त २०१६
पं.अनिलजी माकणे व पं.सुरेशजी चिंतावार (वैदिक विद्वान) धर्माबाद	आर्य समाज, शहापूर ता.देगलूर	१५, १६, १७ अगस्त २०१६
पं.अरूणजी चव्हाण (परळी-वै.) पं.रवींद्रजी शास्त्री माजलगांव(वैदिक विद्वान) पं.अशोकजी कातपुरे (भजनोपदेशक) सुगांव	आर्य समाज, अंबाजोगाई आर्य समाज, शिवणखेड ता. चाकुर	१३, १४, १५ अगस्त २०१६ २१, २२, २३ अगस्त २०१६
प्रा.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) परळी सौ.सुमनबाई चौहान (भजनोपदेशिका)उदगीर	आर्य समाज, करडखेल ता. उदगीर आर्य समाज, लोहारा ता. उदगीर	१५, १६, १७ अगस्त २०१६ २०, २१, २२ अगस्त २०१६
स्वामी सम्यक् क्रांतिवेशजी, पं.लक्ष्मणरावजी आर्य गुरूजी पं.भागवतरावजी आघाव (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, घटांग्रा ता. गंगाखेड आर्य समाज, राणी सावरगांवता. गंगाखेड आर्य समाज, गंगाखेड	३, ४ अगस्त २०१६ ५, ६ अगस्त २०१६ ७, ८ अगस्त २०१६

पं.लक्ष्मणरावजी आर्य गुरूजी पं.पाटलोबा मुंडे (वैदिक विद्वान) परळी-वै.	आर्य समाज, मांडवा ता. परळी-वै. आर्य समाज, सारडगांव ता. परळी-वै.	२३, २४ अगस्त २०१६ २६, २७ अगस्त २०१६
पं.तानाजी शास्त्री, परळी-वै प्रा.लक्ष्मीकांतजी शास्त्री - माजलगांव(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, घाटनांदूर ता.अंबाजोगाई आर्य समाज, माजलगांव	१३, १४ अगस्त २०१६ २०, २१, २२ अगस्त २०१६
पं. ज्ञानकुमारजी आर्य व पं. प्रल्हादजी मानकोसकर (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, टाका ता.औसा आर्य समाज, बेलकुड ता.औसा आर्य समाज, रामेगांव ता.औसा आर्य समाज, मोगरगा ता.औसा आर्य समाज, मंगरूळ ता.औसा आर्य समाज, किल्लारी ता.औसा आर्य समाज, अजनी ता.शि.अनंतपाळ आर्य समाज, दैठणा ता.शि.अनंतपाळ आर्य समाज, धनेगांव ता.उदगीर आर्य समाज, वलांडी ता.देवणी आर्य समाज, टाकळी ता.उदगीर	३, ४ अगस्त २०१६ ५ अगस्त २०१६ ६, ७ अगस्त २०१६ ८, ९ , १० अगस्त २०१६ ११, १२ अगस्त २०१६ १३ अगस्त २०१६ २१, २२ अगस्त २०१६ २३ अगस्त २०१६ २४ अगस्त २०१६ २५, २६ अगस्त २०१६ २७, २८ अगस्त २०१६
डॉ. प्रकाशजी कच्छवा (वैदिक विद्वान) औराद (शहा.) एवं पं. शिवाजी निकम (आर्य भजनोपदेशक)मोगरगा	आर्य समाज, मदनसुरी ता.निलंगा आर्य समाज, येलमवाडी ता.निलंगा आर्य समाज, हलगरा ता.निलंगा आर्य समाज, बोटकूळ ता.निलंगा आर्य सं., कासारबालकुंदा ता.निलंगा आर्य समाज,सय्यद अकुलगा ता.शि.अं. आर्य समाज, उजेड ता.शि.अंनतपाळ	३, ४ अगस्त २०१६ ५, ६ अगस्त २०१६ ७, ८ अगस्त २०१६ ९, १० अगस्त २०१६ ११, १२ अगस्त २०१६ १३, १४ अगस्त २०१६ १५, १६ अगस्त २०१६
पं. वशिष्टजी आर्य (वैदिक विद्वान)अंबाजोगाई	आर्य समाज, हनुमंतवाडी ता.निलंगा आर्य समाज, कासारशिरसी ता.निलंगा आर्य समाज, बडूर ता.निलंगा आर्यसमाज,नदीवाडी ता.शि.अनंतपाळ आर्यसमाज, अहमदपूर	३, ४ अगस्त २०१६ ५, ६ अगस्त २०१६ ७, ८ अगस्त २०१६ ९, १० अगस्त २०१६ २९, ३० अगस्त २०१६
पं. सोममुनिजी व पं.मनोहरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, ईट ता.वाशी आर्य समाज, घाटपिंपरी ता.वाशी आर्य समाज, गिरवली ता.वाशी आर्य समाज, चांदवड ता.वाशी आर्य समाज, अंजनसोडा ता.परंडा आर्य समाज, मानेवाडी ता.जि.बीड आर्य समाज, बीड	३ अगस्त २०१६ ४, ५ अगस्त २०१६ ६ अगस्त २०१६ ७ अगस्त २०१६ ८ अगस्त २०१६ ९ अगस्त २०१६ १०, ११ अगस्त २०१६

पं. भानुदासरावजी देशमुख पं. गोपीचंदजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) अंबाजोगाई	आर्य समाज, शिराढोण ता.कळंब आर्य समाज, बनसारोळा ता.अंबाजोगाई	१८, १९ अगस्त २०१६ २०, २१ अगस्त २०१६
डॉ.नयनकुमार आचार्य पं. धोंडीरामजी शेप गुरूजी (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, अंधोरी ता.अहमदपूर आर्य समाज, येलदरी ता.अहमदपूर आर्य समाज, अंबुलगा ता.निलंगा	१३, १४ अगस्त २०१६ १५, १६ अगस्त २०१६ २१, २२ अगस्त २०१६
पं.अखिलेशजी शर्मा (वैदिक विद्वान) लातूर	आर्य समाज, स्वातंत्र्य सैनिक कॉलनी, लातूर	१४, अगस्त २०१६
प्राचार्य देवदत्तजी तुंगार (वैदिक विद्वान) नांदेड	आर्य समाज, उमरी जि. नांदेड आर्य समाज, तरोडा (बु.), नांदेड	१६ अगस्त २०१६ १९ अगस्त २०१६
पं.विजयकुमारजी अग्रवाल पं. दयानंद आर्य पं. दिगंबरजी शास्त्री (शिंदे) (वैदिक विद्वान) परभणी	आर्य समाज, मानवत जि. परभणी आर्य समाज, कौसडी ता.जि.परभणी आर्य समाज, पूर्णा जि. परभणी	१३, १४ अगस्त २०१६ २२ अगस्त २०१६ २९ अगस्त २०१६
पं. चंद्रकांतजी वेदालंकार (वैदिक विद्वान) हिंगोली	आर्य समाज, जिंतुर जि. परभणी	२१, २२ अगस्त २०१६
पं. माधवरावजी देशपांडे, पं. लखमसीभाई वेलानी (वैदिक विद्वान) पुणे	आर्य समाज, कोल्हापूर आर्य समाज, इचलकरंजी	२७, २८ अगस्त २०१६ २९ अगस्त २०१६
पं.नरदेवजी गुडे-विद्यालंकार प्रा.डॉ.सौ. वसुंधरा गुडे (वैदिक विद्वान) लातूर	आर्य समाज, होळी ता. औसा आर्य समाज, मुशिराबाद ता.जि. लातूर	२०, २२ अगस्त २०१६ २८, २९ अगस्त २०१६
प्रा. चंद्रेश्वरजी शास्त्री सौ. कंचनदेवी शास्त्री (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, सुगांव ता.चाकूर आर्य समाज, गांजुर ता.चाकूर	१४, १५ अगस्त २०१६ २८ अगस्त २०१६
प्रा.शरदचंद्रजी डुमणे पं.शेरसिंहजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) लातूर	आर्य समाज, पानचिंचोली ता.औसा आर्य समाज, बिबराळ ता.शि.अनंतपाळ	६, ७ अगस्त २०१६ २७, २८ अगस्त २०१६

डॉ. चंद्रशेखरजी लोखंडे (वैदिक विद्वान) लातूर	आर्य समाज, कव्हा ता.जि.लातूर	१४ अगस्त २०१६
पं.व्यंकटरावजी कुल्ले पं.विजयपालजी कुल्ले (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, चाकूर जि.लातूर आर्य समाज, वडवळ नागनाथ	२८ अगस्त २०१६ २९, ३० अगस्त २०१६
पं. वेदमुनिजी पं. विज्ञानमुनिजी पं. विश्वनाथजी महाजन (वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, कदेर ता.उमरगा आर्य समाज, बेडगा ता.उमरगा आर्य समाज, मुरूम ता.लोहारा आर्य समाज, सास्तूर ता.लोहारा	२७, २८ अगस्त २०१६ २९ अगस्त २०१६ ३० अगस्त २०१६ ३१ अगस्त २०१६
पं. नारायणराव कुलकर्णी, पं. यादवराव भांगे (वैदिक विद्वान)नांदेड	आर्य समाज, कंधार जि. नांदेड आर्य समाज, मुखेड जि. नांदेड आर्य समाज, बाराहळी जि. नांदेड	१३ अगस्त २०१६ १९,२० अगस्त २०१६ २१ अगस्त २०१६
प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शिंदे (शास्त्री) प्रा.अर्जुनरावजी सोमवंशी (वैदिक विद्वान) उदगीर	आर्य समाज, हाळी ता. उदगीर आर्य समाज, हेर ता. उदगीर	१३, १४ अगस्त २०१६ २०, २१ अगस्त २०१६
पं. माणिकरावजी टोंपे पं.धर्ममुनिजी (वैदिक विद्वान) उदगीर	आर्य समाज, साकोळ ता. शि.अनंतपाळ आर्य समाज, नेत्रगांव ता. उदगीर आर्य समाज, बोरूळ ता. उदगीर	१६,१७,१८अगस्त २०१६ १९, २० अगस्त २०१६ २१, २२ अगस्त २०१६
ॲड. प्रमोदजी मिश्रा पं.सोमनाथअप्पा आर्य (वैदिक विद्वान) किल्ले धारूर	आर्य समाज, अंजनडोह ता.धारूर आर्य समाज, केज जि.बीड	१३, अगस्त २०१६ २७ अगस्त २०१६

सभी आर्य समाजों व विद्वानों से निवेदन है कि, इस वर्ष महाराष्ट्र में अकाल पडने के कारण श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम साधारण रूप में मनाया जा रहा हैं। सभा ने महाराष्ट्र के ही स्थानीय विद्वानों व भजनोपदेशकों द्वारा वेदप्रचार करने का निर्णय लिया और इसके अनुसार ही पूरा कार्यक्रम बनाया गया है। अंतः सभी आर्य समाजें इसका स्वीकार करें और प्रदत्त तिथियों के अनुसार ही श्रावणी वेदप्रचार का कार्यक्रम आयोजित करें। इन कार्यक्रमों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करते हुए श्रावणी उत्सव उत्साहपूर्वक मनावें। वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुचांकर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करने हेतु प्रयास करें। यदि कोई कठिनाई हो तो सभा के पदाधिकारियों से संपर्क करें।

श्रावणी कार्यक्रमों की सफलता हेतु आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

-: विनीत :-

डॉ.ब्रह्ममुनि (प्रधान) **माधव के.देशपाण्डे** (मन्त्री) मो. ९८२२२९५५४५ **उग्रसेन राठौर** (कोषाध्यक्ष) **लक्ष्मण आर्य**-गुरूजी (वेदप्रचार अधिष्ठाता) मो. ९४२०२६९९२४

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड (महाराष्ट्र)

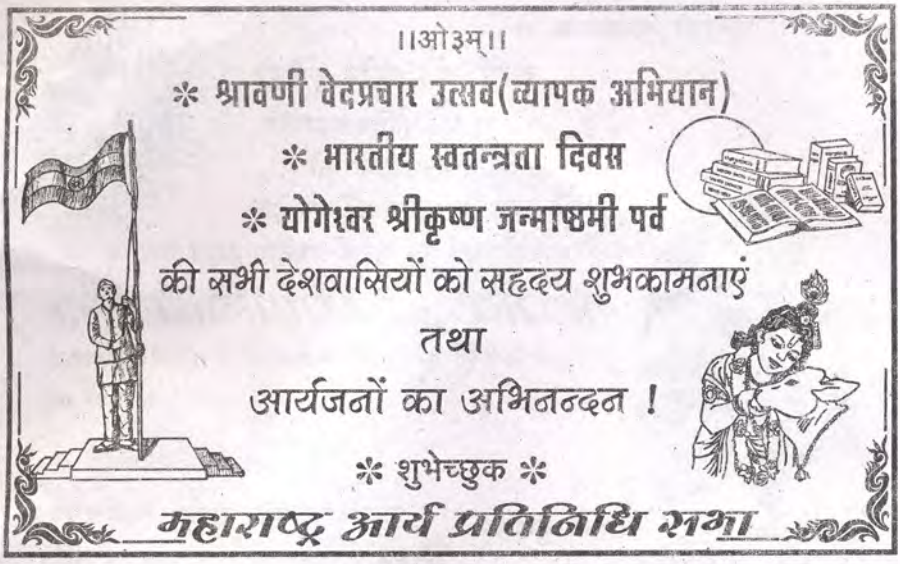

राज्यस्तरीय निबन्ध स्पर्धाओं के परिणाम

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष २०१५ में राज्यस्तर पर आयोजित प्रा.डॉ.सौ.विमलादेवी एवम् श्री सुग्रीव बलीरामजी काले गौरव अंतरमहाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा तथा सौ.तारादेवी एवम् श्री प्रा.जयनारायण मुंदडा गौरव विद्यालयीन निबंध स्पर्धा को बढचढकर प्रतिसाद मिला । इन दोनों स्पर्धाओं के लिए राज्य के विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों के छात्रों ने उत्स्फूर्त रुप में निबंध भेजे थे। इन दोनों स्पर्धाओं के परिणाम इस प्रकार से हैं –

प्रा.डॉ.सौ. व श्री काले गौरव अंतरमहाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा

१) प्रथम – कु.राधिका गेंदालाल कुरील –भारुका आर्यकन्या उ.मा.विद्यालय, हिंगोली

२) द्वितीय– कु.पूजा शिवाजी चिवरे – उमाबाई श्राविका क.महावि., सोलापूर

३) तृतीय– कु. नेहा सीताराम पांढरे– हालगे अभियांत्रिकी महावि., परळी–वै.

४) तृतीय–कु.संजना जगदीशप्रसाद दुबे – लक्ष्मीबाई देशमुख महिला महावि.,परली

सौ.व श्री मुंदडा गौरव विद्यालयीन निबंध स्पर्धा

१) प्रथम – कु.अश्विनी बलीराम बडे – श्री सरस्वती विद्यालय, परली–वै.

२) द्वितीय– कु.वैष्णवी प्रकाश फड– श्री जगमित्र नागा विद्यालय, परली–वै.

३) तृतीय – कु.शिवानी ज्ञानोबा चाटे – न्यू हायस्कूल, परली–वै.

इन सभी विजेताओं का अभिनंदन ! पुरस्कार वितरण लातूर में सम्पन्न हुआ।

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

वेदों की ओर लौटो !

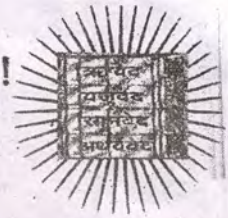

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव– 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

राज्यस्तरीय निबंध स्पर्धा-पारितोषिक वितरण

प्रा.डॉ.सौ.व श्री काले गौरव राज्यस्तरीय अंतर्महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा का प्रथम पुरस्कार सभामंत्री श्री देशपांडे द्वारा ग्रहण करते हुए कु.राधिका गेंदालाल कुरील (आर्यकन्या क.महावि.,हिंगोली)

सौ.ब श्री प्रा.मुंदडा गौरव राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबंध स्पर्धा का प्रथम पुरस्कार आर्यविद्वान् डॉ.दीनदयालजी द्वारा ग्रहण करते हुए कु.अश्विनी फड (श्री सरस्वती विद्यालय,परली-वै.)। साथ में हैं पिता प्रा.बळीरामजी फड।

प्रा.डॉ.सौ.व श्री काले गौरव निबंध स्पर्धा का तृतीय पुरस्कार स्वीकारते हुए कु.संजना जगदीशप्रसाद दुबे (लक्ष्मीबाई देशमुख महिला महावि.परली)। साथ में है संजना के भाई।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा, सेहत के प्रति जागरुकता, शुध्दता एवं गुणवत्ता, करोंडों परिवारों का विश्वास, यह है एम.डी.एच.का इतिहास जो पिछले ९० वर्षों से हर कसौटी पर खरे उतरे हैं -जिनका कोई विकल्प नहीं। जी हां यही हैं आपकी सेहत के रखवाले -

लाजवाब खाना ! एम.डी.एच. मसाले हैं ना !

MDH

मसाले

असली मसाले

सच-सच

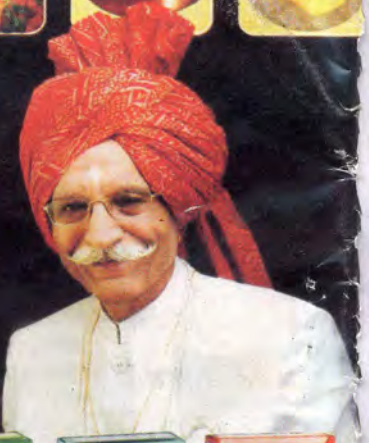

आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

ESTD. 1919

MAHASHIAN DI HATTI LTD.

Regd. Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015.
Ph. : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री _____

_____

_____

_____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत् शरदः शतम् ।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !